PRGI No. GJHIN/25/A2786

नवसर्जन संस्कृति

नवसर्जन संस्कृति

PUBLISHED HIINDI DAILY FROM AHMEDABAD

वर्ष : 01
अंक : 216
दि. 10.05.2026,
रविवार
पाना : 04
किंमत : 00.50 पैसा

हंता वायरस का बढ़ता खतरा, वैश्विक स्वास्थ्य एजेंसियों की चिंता गहराई, क्रूज यात्रियों में संक्रमण से मचा हड़कंप

मैड्रिड/वॉशिंगटन। दुनिया एक बार फिर एक नए संक्रामक खतरे की ओर सतर्क होती दिखाई दे रही है। हंता वायरस संक्रमण के मामलों में हालिया वृद्धि ने वैश्विक स्वास्थ्य एजेंसियों की चिंता बढ़ा दी है। विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ) की ताजा रिपोर्ट के अनुसार अब तक कुल आठ मामलों की पुष्टि हुई है, जिनमें से तीन लोगों की मौत हो चुकी है। इस तरह संक्रमण की मृत्यु दर लगभग 38 प्रतिशत दर्ज की गई है, जो इसे गंभीर संक्रामक रोगों की श्रेणी में और अधिक चिंताजनक बनाती है।

डब्ल्यूएचओ के अनुसार इन आठ मामलों में छह मरीजों में पीसीआर जांच के माध्यम से एंडीज स्ट्रेन की पुष्टि हुई है, जबकि दो मामलों को अभी संदिग्ध श्रेणी में रखा गया है। एंडीज स्ट्रेन हंता वायरस का एक दुर्लभ और अपेक्षाकृत अधिक खतरनाक प्रकार माना जाता है, क्योंकि कुछ विशेष परिस्थितियों में यह व्यक्ति से व्यक्ति में भी फैल सकता है। यही कारण है कि इस संक्रमण को लेकर अंतरराष्ट्रीय स्तर पर सतर्कता और बढ़ गई है। वर्तमान स्थिति में चार संक्रमित मरीजों का इलाज दक्षिण अफ्रीका, नीदरलैंड और स्विट्जरलैंड के विभिन्न अस्पतालों में चल रहा है। चिकित्सकों की टीम लगातार उनकी स्थिति पर नजर रखे हुए है। वहीं, जर्मनी भेजे गए एक संदिग्ध मरीज की जांच रिपोर्ट निगेटिव आई है, जिससे वहां अस्थायी रूप से राहत की स्थिति बनी है। स्वास्थ्य विशेषज्ञों के अनुसार इस तरह के संक्रमण में शुरुआती पहचान और त्वरित उपचार अत्यंत महत्वपूर्ण होता है, क्योंकि देर होने पर स्थिति गंभीर हो सकती है।

यह पूरा मामला एक क्रूज जहाज से जुड़ा हुआ बताया जा रहा है, जिस पर 2 मई को पहली बार संक्रमण की सूचना मिली थी। उस समय जहाज पर कुल 147 यात्री और चालक दल के सदस्य मौजूद थे, जबकि 34 लोग पहले ही क्रूज से उतर चुके थे। जैसे ही संक्रमण की जानकारी सामने आई, अंतरराष्ट्रीय स्वास्थ्य एजेंसियों और संबंधित देशों की सरकारों ने तत्काल निगरानी और नियंत्रण की कार्रवाई शुरू कर दी।

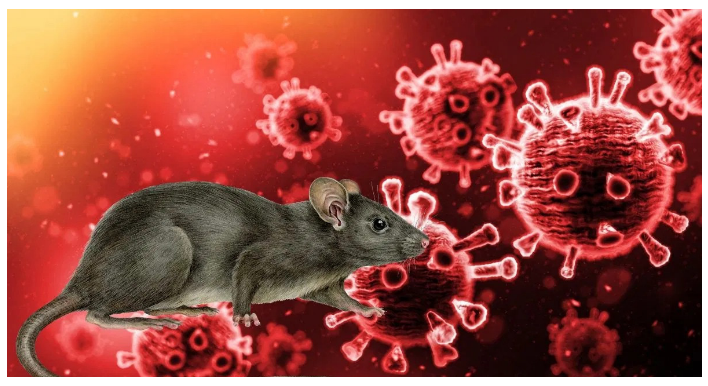

संक्रमण के बढ़ते खतरे को देखते हुए कई देशों ने अपने नागरिकों को सुरक्षित निकालने की प्रक्रिया शुरू कर दी है। अमेरिकी सेंटर फॉर डिजीज कंट्रोल एंड प्रिवेंशन (CDC) ने कहा है कि वह क्रूज पर मौजूद अमेरिकी नागरिकों की स्थिति पर लगातार नजर रख रहा है। एजेंसी ने यह भी बताया कि प्रभावित नागरिकों को विशेष मेडिकल फ्लाइट के माध्यम से अमेरिका के ओमाहा शहर में लाया जाएगा, जहां उनकी आगे की चिकित्सा व्यवस्था की जाएगी। क्रूज ऑपरेटर ओशनवाइड एक्सपीडिशंस के अनुसार जहाज पर इस समय 17 अमेरिकी नागरिक मौजूद हैं। संयुक्त राज्य अमेरिका के राष्ट्रपति Donald Trump ने इस स्थिति पर टिप्पणी करते हुए कहा कि फिलहाल हालात नियंत्रण में दिख रहे हैं, हालांकि विशेषज्ञों का मानना है कि संक्रमण की प्रकृति को देखते हुए सतर्कता अभी भी आवश्यक है।

दूसरी ओर यूरोपीय देशों ने भी तेजी से प्रतिक्रिया दी है। जर्मनी, फ्रांस, बेल्जियम, आयरलैंड और नीदरलैंड ने अपने नागरिकों को निकालने के लिए विशेष विमान भेजने की पुष्टि की है। स्पेन के गृह मंत्री फर्नांडो ग्रांडे-मार्लास्का ने बताया कि यूरोपीय संघ अतिरिक्त विमानों की व्यवस्था कर रहा है ताकि सभी नागरिकों को सुरक्षित वापस लाया जा सके। इस समन्वित प्रयास को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर स्वास्थ्य आपात स्थिति के रूप में देखा जा रहा है।

इस पूरे मामले ने एक बड़ा विवाद भी खड़ा कर दिया है कि संक्रमण की शुरुआत आखिर कहां से हुई। शुरुआती रिपोर्टों में अर्जेंटीना के दक्षिणी प्रांत टिएरा डेल फुएगो के उशुआया क्षेत्र के कचरे के ढेर को संभावित स्रोत बताया गया था। लेकिन स्थानीय अधिकारियों ने इस दावे को सिरे से खारिज कर दिया है। प्रांतीय महामारी विज्ञान निदेशक जुआन फाकुंडो पेट्रिना ने कहा कि इस तरह के दावे बिना वैज्ञानिक आधार के हैं और यह क्षेत्र की छवि को नुकसान पहुंचाने जैसा है। उनका कहना है कि उशुआया में पहले कभी हंता वायरस का मामला दर्ज नहीं हुआ है।

उशुआया एक महत्वपूर्ण पर्यटन केंद्र है और अंटार्कटिका जाने वाले क्रूज यात्रियों के लिए प्रमुख प्रवेश द्वार माना जाता है। पिछले वर्ष यहां 1.57 लाख से अधिक क्रूज यात्री पहुंचे थे, जो स्थानीय आबादी से लगभग दोगुना है। ऐसे में इस संक्रमण की खबर ने पर्यटन उद्योग में चिंता बढ़ा दी है। स्थानीय प्रशासन और पर्यटन व्यवसाय से जुड़े लोगों का मानना है कि यदि संक्रमण को लेकर डर बढ़ता है, तो आने वाले सीजन में बुकिंग पर गंभीर असर पड़ सकता है।

टिएरा डेल फुएगो के पूर्व स्वास्थ्य मंत्री रूबेन राफेल ने कहा कि अंतरराष्ट्रीय मीडिया में उशुआया को लेकर बनी नकारात्मक छवि लंबे समय तक प्रभाव डाल सकती है। उन्होंने चेतावनी दी कि यदि स्थिति स्पष्ट नहीं की गई, तो यह क्षेत्रीय पर्यटन अर्थव्यवस्था के लिए बड़ा झटका साबित हो सकता है।

इसी बीच जांच प्रक्रिया में देरी को लेकर भी सवाल उठ रहे हैं। अर्जेंटीना के स्वास्थ्य मंत्रालय ने कूड़ा स्थल और आसपास के इलाकों में चूहों की जांच के लिए विशेषज्ञों की टीम भेजने की घोषणा की थी, लेकिन रिपोर्ट के अनुसार दो दिन बीत जाने के बाद भी टीम वहां नहीं पहुंची है। इससे संक्रमण के वास्तविक स्रोत की पहचान में देरी हो रही है, जिसे विशेषज्ञ गंभीर समस्या मान रहे हैं।

महामारी विशेषज्ञ सेलीन गाउंडर ने कहा कि किसी भी संक्रामक बीमारी में सबसे महत्वपूर्ण कदम उसके स्रोत की पहचान करना होता है। यदि समय रहते संक्रमण के स्रोत का पता नहीं लगाया गया, तो भविष्य में यह और अधिक फैल सकता है। कई स्वतंत्र वैज्ञानिकों का मानना है कि इस संक्रमण का वास्तविक स्रोत संभवतः मध्य पैटागोनिया के जंगल हो सकते हैं, जहां एंडीज वायरस फैलाने वाले लंबी पूंछ वाले चूहे बड़ी संख्या में पाए जाते हैं।

हंता वायरस सामान्यतः कृंतक जीवों, विशेषकर चूहों के माध्यम से फैलता है और संक्रमित मल, मूत्र या लार के संपर्क में आने से मनुष्यों में पहुंच सकता है। गंभीर मामलों में यह श्वसन तंत्र को प्रभावित करता है और जानलेवा भी हो सकता है। हालांकि यह वायरस सामान्य रूप से व्यक्ति से व्यक्ति में नहीं फैलता, लेकिन एंडीज स्ट्रेन जैसे दुर्लभ प्रकारों में यह क्षमता देखी गई है, जिससे इसका खतरा और बढ़ जाता है।

वर्तमान स्थिति में विश्व स्वास्थ्य संगठन और संबंधित देश लगातार स्थिति पर नजर रखे हुए हैं। यात्रियों की सुरक्षा, संक्रमण की रोकथाम और स्रोत की पहचान को प्राथमिकता दी जा रही है। विशेषज्ञों का मानना है कि आने वाले दिनों में जांच रिपोर्ट और अधिक स्पष्टता प्रदान करेगी, जिससे यह तय किया जा सकेगा कि यह एक सीमित प्रकोप है या किसी बड़े संक्रमण का संकेत। फिलहाल वैश्विक स्वास्थ्य तंत्र इस नए खतरे को लेकर पूरी तरह सतर्क है और हर कदम सावधानीपूर्वक उठाया जा रहा है।

27 हजार करोड़ के कथित घोटाले में अनिल अंबानी समूह पर शिकंजा, मुंबई में सीबीआई की बड़ी छापेमारी

मुंबई। देश के बैंकिंग और वित्तीय क्षेत्र से जुड़े एक बड़े कथित घोटाले में केंद्रीय अन्वेषण ब्यूरो ने शनिवार को उद्योगपति Anil Ambani के नेतृत्व वाले रिलायंस समूह पर व्यापक कार्रवाई करते हुए मुंबई में 17 स्थानों पर एक साथ छापेमारी की। एजेंसी की यह कार्रवाई उन मामलों को लेकर की गई है, जिनमें सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों और भारतीय जीवन बीमा निगम को 27 हजार करोड़ रुपये से अधिक का कथित नुकसान पहुंचाने का आरोप है। इस कार्रवाई ने कॉर्पोरेट और वित्तीय जगत में हलचल पैदा कर दी है।

सीबीआई अधिकारियों के अनुसार जांच के दायरे में समूह की दूरसंचार, वाणिज्यिक वित्त और आवास ऋण से जुड़ी कई कंपनियां हैं। एजेंसी ने उन कंपनियों के निदेशकों के आवासों और कार्यालयों पर भी छापेमारी की, जिन पर आरोप है कि उन्होंने कथित रूप से बैंकों के धन की हेराफेरी में भूमिका निभाई। जांच एजेंसियों का दावा है कि धन के लेनदेन और उपयोग के लिए कई बिचौलिया कंपनियों का इस्तेमाल किया गया, जिनके माध्यम से वित्तीय अनियमितताओं को अंजाम दिया गया। सूत्रों के मुताबिक, सीबीआई ने शुक्रवार को मुंबई की विशेष अदालत से तलाशी वारंट प्राप्त किया था। अदालत से अनुमति मिलने के बाद शनिवार सुबह से ही अलग-अलग टीमों ने मुंबई के विभिन्न इलाकों में समन्वित तरीके से कार्रवाई शुरू की। छापेमारी के दौरान कई महत्वपूर्ण दस्तावेज, इलेक्ट्रॉनिक रिकॉर्ड, वित्तीय लेनदेन से जुड़े डेटा और डिजिटल अभिलेख जब्त किए गए हैं। एजेंसी अब इन दस्तावेजों की फॉरेंसिक और वित्तीय जांच कर रही है, ताकि कथित लेनदेन की वास्तविक प्रकृति का पता लगाया जा सके।

जांच एजेंसियों के अनुसार इस कथित वित्तीय घोटाले में सरकारी बैंकों और Life Insurance Corporation of India को लगभग 27,337 करोड़ रुपये का नुकसान हुआ है। प्रारंभिक जांच में यह भी सामने आया है कि जिन कंपनियों का इस्तेमाल कथित धन हस्तांतरण और फंड डायवर्जन के लिए किया गया, उनमें से कई एक ही पते से संचालित हो रही थीं। इससे एजेंसियों को शेल कंपनियों और फर्जी कॉर्पोरेट नेटवर्क की आशंका और मजबूत हुई है।

सीबीआई सूत्रों का कहना है कि जांच केवल प्रत्यक्ष वित्तीय लेनदेन तक सीमित नहीं है, बल्कि यह भी देखा जा रहा है कि क्या बैंक ऋण प्राप्त करने के दौरान दस्तावेजों, गारंटी और वित्तीय स्थिति को लेकर किसी प्रकार की गलत जानकारी प्रस्तुत की गई थी। जांच में यह भी पड़ताल की जा रही है कि ऋण स्वीकृति प्रक्रिया के दौरान किन अधिकारियों और संस्थाओं की भूमिका रही और क्या नियमों की अनदेखी कर बड़े पैमाने पर फंड जारी किए गए।

यह पहला मौका नहीं है जब इस मामले में जांच एजेंसियों ने कार्रवाई की हो। इससे पहले भी सीबीआई ने समूह से जुड़ी कई इकाइयों और अधिकारियों के खिलाफ जांच की थी। 24 अप्रैल को समूह की एक दूरसंचार कंपनी से जुड़े दो वरिष्ठ अधिकारियों डी. विश्वनाथ और अनिल कालया को गिरफ्तार किया गया था। एजेंसी का आरोप है कि दोनों अधिकारियों ने बैंकिंग लेनदेन और धन के उपयोग में सक्रिय भूमिका निभाई थी। फिलहाल दोनों न्यायिक हिरासत में हैं और उनसे पूछताछ जारी है।

मामले की गंभीरता को देखते हुए इसकी जांच देश के उच्चतम न्यायालय की निगरानी में की जा रही है। सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों और भारतीय जीवन बीमा निगम की शिकायतों के आधार पर सीबीआई अब तक कुल सात अलग-अलग मामले दर्ज कर चुकी है। कानूनी विशेषज्ञों का कहना है कि सुप्रीम कोर्ट की निगरानी में होने के कारण जांच एजेंसियों पर निष्पक्ष और विस्तृत जांच का अतिरिक्त दबाव है।

वित्तीय विशेषज्ञों के अनुसार, यदि आरोप साबित होते हैं तो यह हाल के वर्षों के सबसे बड़े बैंकिंग और कॉर्पोरेट धोखाधड़ी मामलों में से एक माना जा सकता है। सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों और बीमा संस्थाओं को हुए कथित नुकसान का असर केवल वित्तीय संस्थानों तक सीमित नहीं रहता, बल्कि इसका प्रभाव आम निवेशकों, पॉलिसी धारकों और पूरे आर्थिक तंत्र पर पड़ता है। यही कारण है कि इस मामले को लेकर वित्तीय नियामक संस्थाएं भी सतर्क नजर आ रही हैं।

कॉर्पोरेट जगत में इस कार्रवाई को लेकर व्यापक चर्चा शुरू हो गई है। बाजार विशेषज्ञों का मानना है कि इस तरह की जांचें भारतीय बैंकिंग प्रणाली में पारदर्शिता और जवाबदेही सुनिश्चित करने के लिए महत्वपूर्ण हैं। हालांकि कुछ विशेषज्ञ यह भी मानते हैं कि इतने बड़े कारोबारी समूहों से जुड़े मामलों में जांच लंबी और जटिल हो सकती है, क्योंकि इसमें कई स्तरों पर वित्तीय लेनदेन, सहयोगी कंपनियां और कानूनी प्रक्रियाएं शामिल होती हैं।

मदर्स डे पर भावुक कहानी: 64 वर्षीय मां ने किडनी दान कर 40 वर्षीय बेटे को दिया नया जीवन

नई दिल्ली। जीवन और मृत्यु के बीच जब कोई विकल्प शेष नहीं बचता, तब परिवार की ताकत और विशेषकर मां का त्याग एक नई उम्मीद बन जाता है। मदर्स डे के अवसर पर ऐसा ही एक अत्यंत भावुक और प्रेरणादायक मामला सामने आया है, जिसमें एक 64 वर्षीय मां ने अपने 40 वर्षीय बेटे को अपनी एक किडनी दान कर उसे दूसरा जीवन दिया। यह कहानी केवल एक चिकित्सा उपलब्धि नहीं, बल्कि मातृत्व की उस गहराई का उदाहरण है, जिसमें त्याग, प्रेम और निःस्वार्थ भावना सर्वोपरि होती है।

बिहार मूल के 40 वर्षीय जितेंद्र लंबे समय से गंभीर उच्च रक्तचाप की समस्या से जूझ रहे थे। समय के साथ यह बीमारी इतनी बढ़ गई कि उनकी दोनों किडनियां धीरे-धीरे काम करना बंद कर गईं और उन्हें स्टेज-5 क्रॉनिक किडनी डिजीज की स्थिति में पहुंचा दिया। परिवार के अनुसार, उनकी हालत इतनी बिगड़ चुकी थी कि उन्हें सप्ताह में तीन बार डायलिसिस कराना पड़ता था, जिससे उनका जीवन पूरी तरह चिकित्सा व्यवस्था पर निर्भर हो गया था। डॉक्टरों ने स्पष्ट कर दिया था कि इस स्थिति में केवल किडनी प्रत्यारोपण ही जीवन बचाने का एकमात्र विकल्प है।

इस कठिन समय में परिवार ने किडनी दानकर्ता की तलाश शुरू की, लेकिन कोई उपयुक्त मेल नहीं मिल सका। तभी एक ऐसा क्षण आया, जिसने पूरे परिवार की दिशा बदल दी। जितेंद्र की मां विंध्यवासिनी देवी ने बिना किसी हिचकिचाहट के अपने बेटे को किडनी दान करने का निर्णय लिया। चिकित्सकों ने जब उनकी जांच की तो पाया कि 64 वर्ष की उम्र के बावजूद उनका स्वास्थ्य प्रत्यारोपण के लिए उपयुक्त है। यह निर्णय केवल चिकित्सा दृष्टि से नहीं, बल्कि भावनात्मक रूप से भी परिवार के लिए बेहद महत्वपूर्ण था।

नई दिल्ली के एक निजी अस्पताल में 13 अप्रैल को यह जटिल लेकिन सफल किडनी प्रत्यारोपण किया गया। सर्जरी के दौरान मां की बाईं किडनी निकालकर बेटे के शरीर में प्रत्यारोपित की गई। डॉक्टरों के अनुसार, सबसे राहत की बात यह रही कि प्रत्यारोपित किडनी ने ऑपरेशन के दौरान ही काम करना शुरू कर दिया, जो इस प्रक्रिया की सफलता का संकेत था। ऑपरेशन के बाद मरीज की स्थिति स्थिर रही और धीरे-धीरे उनके स्वास्थ्य में सुधार देखा गया।

चिकित्सा टीम ने बताया कि ऐसे मामलों में दाता और प्राप्तकर्ता का मेल अत्यंत महत्वपूर्ण होता है। उम्र अधिक होने के बावजूद विंध्यवासिनी देवी का स्वास्थ्य मजबूत पाया गया, जिससे यह प्रत्यारोपण संभव हो सका। डॉक्टरों का कहना है कि यह मामला उन दुर्लभ उदाहरणों में से एक है, जहां एक वरिष्ठ आयु की दाता ने सफलतापूर्वक अंगदान किया है और मरीज को नया जीवन मिला है। ऑपरेशन के बाद जितेंद्र की हालत में लगातार सुधार हो रहा है। अब वह डायलिसिस से मुक्त हो चुके हैं और सामान्य जीवन की ओर लौट रहे हैं। भावुक होकर उन्होंने कहा कि अगर उनकी मां ने यह निर्णय नहीं लिया होता, तो उनका जीवन बच पाना लगभग असंभव था। उन्होंने कहा कि मां केवल जन्म देने वाली नहीं होती, बल्कि वह हर कठिन समय में जीवन की सबसे बड़ी ताकत बनकर सामने आती हैं। उनके अनुसार, उनकी मां ने उन्हें केवल एक बार जन्म नहीं दिया, बल्कि दूसरी बार जीवन भी दिया है।

परिवार के अन्य सदस्यों ने भी इस निर्णय को एक अद्भुत और साहसी कदम बताया। छोटे भाई विकास कुमार ने कहा कि यह केवल एक चिकित्सा प्रक्रिया नहीं थी, बल्कि मां के प्रेम और त्याग का जीवंत उदाहरण है। उन्होंने बताया कि पूरे परिवार ने इस निर्णय में मां का समर्थन किया, क्योंकि सभी जानते थे कि यह कदम जितेंद्र के जीवन को बचाने के लिए आवश्यक है।

इस घटना ने न केवल परिवार को भावनात्मक रूप से जोड़ दिया है, बल्कि समाज में अंगदान को लेकर जागरूकता का संदेश भी दिया है। डॉक्टरों का कहना है कि भारत में किडनी फेल्योर के मामलों में लगातार वृद्धि हो रही है, और ऐसे में अंगदान जीवन बचाने का सबसे प्रभावी माध्यम बन सकता है। हालांकि सामाजिक और जागरूकता की कमी के कारण अभी भी बहुत से मरीज समय पर प्रत्यारोपण नहीं करा पाते। विशेषज्ञों का मानना है कि इस तरह के मामले समाज में अंगदान के प्रति सकारात्मक सोच को बढ़ावा देते हैं। मां द्वारा अपने बेटे को किडनी दान करना केवल एक चिकित्सा निर्णय नहीं, बल्कि मानवता और मातृत्व की सर्वोच्च मिसाल है। यह कहानी उन सभी परिवारों के लिए प्रेरणा है जो किसी गंभीर बीमारी से जूझ रहे हैं और अंगदान के विकल्प पर विचार कर रहे हैं।

मदर्स डे के अवसर पर यह घटना एक भावनात्मक संदेश देती है कि मां का प्रेम केवल शब्दों में नहीं, बल्कि जीवन बचाने वाले कार्यों में भी प्रकट होता है। जितेंद्र और विंध्यवासिनी देवी की यह कहानी आज लाखों लोगों के लिए उम्मीद और प्रेरणा का स्रोत बन गई है, जो यह साबित करती है कि सच्चा मातृत्व किसी भी सीमा से परे होता है।

रवींद्र जयंती पर सियासी तकरार, ममता बनर्जी ने अनुमति रद्द होने पर उठाए सवाल

कोलकाता। Mamata Banerjee ने रवींद्र जयंती के अवसर पर गुरुदेव Rabindranath Tagore को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए राज्य सरकार पर गंभीर आरोप लगाए। पश्चिम बंगाल की पूर्व मुख्यमंत्री और तृणमूल कांग्रेस प्रमुख ममता बनर्जी ने दावा किया कि रवींद्र जयंती समारोह आयोजित करने के लिए तीन अलग-अलग स्थानों पर अनुमति मांगी गई थी, लेकिन प्रशासन की ओर से उन सभी प्रस्तावों को अस्वीकार कर दिया गया। इस मुद्दे को लेकर उन्होंने राजनीतिक और सांस्कृतिक स्वतंत्रता पर सवाल उठाते हुए कहा कि अंततः उन्हें अपने आवास पर ही कार्यक्रम आयोजित करने का निर्णय लेना पड़ा।

रवींद्र जयंती के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में ममता बनर्जी ने कहा कि बंगाल की सांस्कृतिक पहचान और रवींद्रनाथ टैगोर की विरासत को लेकर राजनीति नहीं होनी चाहिए। उन्होंने आरोप लगाया कि केवल अनुमति ही नहीं रोकी गई, बल्कि कार्यक्रम के लिए सजावट का सामान उपलब्ध कराने से भी आयोजकों को मना कर दिया गया। ममता बनर्जी ने इसे लोकतांत्रिक मूल्यों और सांस्कृतिक परंपराओं के खिलाफ बताते हुए कहा कि बंगाल की आत्मा को दबाने की कोशिश कभी सफल नहीं हो सकती।

अपने संबोधन में उन्होंने कहा कि रवींद्रनाथ टैगोर केवल बंगाल के कवि नहीं थे, बल्कि पूरी मानवता के लिए प्रेरणा के स्रोत थे। उन्होंने कहा कि टैगोर ने अपने साहित्य, दर्शन और विचारों के माध्यम से विश्व को एकता, प्रेम और मानवीय मूल्यों का संदेश दिया। ममता बनर्जी ने कहा कि आज जब समाज में विभाजन और वैचारिक संघर्ष बढ़ रहे हैं, तब टैगोर के आदर्श पहले से अधिक प्रासंगिक हो गए हैं।

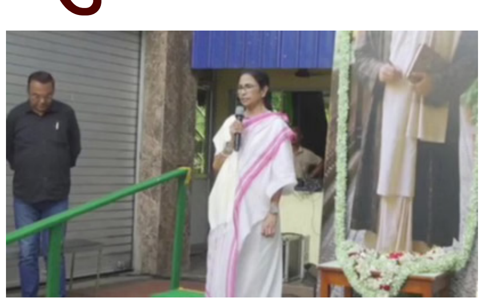

टीएमसी प्रमुख ने इस दौरान भारतीय जनता पार्टी पर भी निशाना साधा और समान विचारधारा वाले दलों से भाजपा को रोकने के लिए एकजुट होने की अपील की। उन्होंने कहा कि देश की सांस्कृतिक और सामाजिक विविधता को बचाने के लिए सभी लोकतांत्रिक शक्तियों को साथ आना होगा। राजनीतिक पर्यवेक्षकों का मानना है कि ममता बनर्जी ने रवींद्र जयंती जैसे सांस्कृतिक मंच के माध्यम से एक बार फिर विपक्षी एकता का संदेश देने की कोशिश की है।

इस अवसर पर ममता बनर्जी ने सोशल मीडिया मंच एक्स पर भी एक भावनात्मक संदेश साझा किया। उन्होंने रवींद्रनाथ टैगोर को "शाश्वत मार्गदर्शक प्रकाश" बताते हुए कहा कि उनकी जयंती केवल एक साहित्यिक आयोजन नहीं, बल्कि बांग्ला भाषा, संस्कृति और विरासत के पुनर्जागरण का उत्सव है। उन्होंने लिखा कि टैगोर का जीवन दर्शन आज भी हर व्यक्ति को अपनी दैनिक यात्रा में प्रेरणा देता है। ममता ने कहा कि टैगोर ने मानवता को यह सिखाया कि विभाजन कभी सत्य नहीं हो सकता, वास्तविक सत्य केवल एकता में निहित है। अपने संदेश में उन्होंने यह भी कहा कि टैगोर ने आक्रामक राष्ट्रवाद की सीमाओं से ऊपर उठकर पूरी मानवता के लिए सार्वभौमिक एकता का संदेश दिया था। उन्होंने लोगों से अपील की कि वे टैगोर के विचारों और आदर्शों को केवल साहित्य तक सीमित न रखें, बल्कि उन्हें अपने जीवन में भी उतारने का प्रयास करें। ममता बनर्जी ने कहा कि गुरुदेव का साहित्य और दर्शन आने वाली पीढ़ियों को भी दिशा देता रहेगा।

कार्यक्रम के दौरान उन्होंने टैगोर की प्रसिद्ध कविता की पंक्तियों का उल्लेख करते हुए कहा, "ओ मेरे दिल, धीरे-धीरे जाग इस पवित्र तीर्थ स्थल पर, इस महान आत्मा के सागर तट पर।" उन्होंने कहा कि यह पंक्तियां केवल कविता नहीं, बल्कि आत्मा को जागृत करने वाला संदेश हैं। ममता बनर्जी ने कामना की कि रवींद्रनाथ टैगोर के दूरदर्शी विचार, जागृत चेतना और रचनात्मक प्रतिभा पूरी दुनिया को प्रेरित करती रहे।

रवींद्र जयंती के अवसर पर बंगाल के विभिन्न हिस्सों में सांस्कृतिक कार्यक्रम, गीत, कवितापाठ और साहित्यिक आयोजन किए गए। हालांकि ममता बनर्जी द्वारा लगाए गए आरोपों के बाद यह आयोजन राजनीतिक चर्चा का विषय भी बन गया। भाजपा की ओर से अभी तक इस मुद्दे पर कोई विस्तृत प्रतिक्रिया सामने नहीं आई है, लेकिन राजनीतिक हलकों में इसे लेकर बहस तेज हो गई है।

विश्लेषकों का मानना है कि पश्चिम बंगाल में संस्कृति और राजनीति का संबंध हमेशा गहरा रहा है। रवींद्रनाथ टैगोर जैसे महान साहित्यकारों की विरासत अक्सर राजनीतिक विमर्श का हिस्सा बन जाती है। ऐसे में रवींद्र जयंती के अवसर पर उठे इस विवाद ने राज्य की राजनीति को नया मुद्दा दे दिया है। आने वाले दिनों में यह मामला और अधिक राजनीतिक रंग ले सकता है, खासकर तब जब राज्य में सांस्कृतिक पहचान और राजनीतिक ध्रुवीकरण को लेकर पहले से ही तीखी बहस जारी है।

संपादकीय

दावे तो बड़े मगर प्रतिनिधित्व कम

एक बार फिर साबित हुआ कि महिला आरक्षण की जोरदार वकालत करने वाले राजनीतिक दल हकीकत में महिलाओं को उनका हक देने में ईमानदार नहीं हैं। हाल ही में पश्चिम बंगाल, केरल, असम, तमिलनाडु और पुडुचेरी में विधानसभा चुनावों में महिलाओं को दिये गए टिकटों ने हकीकत बयां कर दी। महिला आरक्षण के नाम पर पिछले दिनों जमकर राजनीति करने वाले दलों ने तैंतीस प्रतिशत तो दूर, इसकी आधी संख्या के बराबर भी महिलाओं को टिकट नहीं दिए। यह विडंबना ही है कि हालिया विधानसभा चुनावों में एक तो बेहद कम महिलाओं को टिकट दिए गए, दूसरे उनमें भी बहुत कम महिला प्रत्याशी जीतकर विधानसभाओं में पहुंच सकी हैं। उल्लेखनीय है कि हाल में चार राज्यों व एक केंद्रशासित प्रदेश के लिए कुल आठ सौ चौबीस सीटों पर चुनाव संपन्न हुए थे, जिनमें सिर्फ पांच फीसदी सीटों पर ही महिलाएं चुनाव जीतने में सफल हो पायी हैं। दरअसल, जिस प्रतिशत में महिलाओं को आरक्षण देने की पुरजोर वकालत करते राजनीतिक दल नजर आते हैं, उस अनुपात में किसी भी राजनीतिक दल ने उन्हें टिकट नहीं दिए। यहां उल्लेखनीय है कि पश्चिम बंगाल, जिस राज्य को लेकर देश में सबसे ज्यादा गहमागहमी रही, वहां सत्तारूढ़ भाजपा ने कुल 294 सीटों में से तैंतीस पर ही महिलाओं को टिकट दिए। वहीं दूसरी ओर तृणमूल कांग्रेस ने 291 सीटों में बावन महिलाओं को टिकट दिए। कुल मिलाकर राज्य में सिर्फ दस फीसदी महिलाएं ही विधानसभा पहुंच पायीं। निश्चय यह आंकड़ा 33 फीसदी का एक-तिहाई भी नहीं है। कमोबेश तमिलनाडु में सत्ता की दहलीज पर खड़ी टीवीके ने जिन 234 सीटों पर चुनाव लड़ा, उसमें सिर्फ 24 महिलाओं को ही टिकट दिए गए। इसी तरह असम में सत्ता में आए राजग ने सिर्फ छह महिलाओं को ही उम्मीदार बनाया था। वहीं प्रगतिशील होने का दावा करने वाले कांग्रेस नीत यूडीएफ ने सिर्फ दस महिलाओं को ही टिकट दिए। जाहिर है सभी दलों में महिलाओं को उनका हक देने के प्रति उदासीनता देखी गई। हालिया विधानसभा चुनावों में महिलाओं को दिए गए टिकट और उनकी जीत के आंकड़े ने एक बार फिर साबित किया कि जनप्रतिनिधि संस्थाओं में महिलाओं को न्यायसंगत प्रतिनिधित्व देने के लिए आरक्षण देना अपरिहार्य ही है। किसी भी राजनीतिक दल में स्वतः ही महिलाओं को ईमानदारी से तैंतीस फीसदी आरक्षण देने की इच्छाशक्ति नजर नहीं आती है। कहा जा सकता है कि सभी दल महिला प्रतिनिधित्व के मुद्दे पर सिर्फ औपचारिकता पूरी करते ही नजर आते हैं। इस प्रवृत्ति पर अंकुश लगाने का अंतिम विकल्प यथाशीघ्र महिला आरक्षण व्यवस्था ही बचती है। विश्वास करें कि सभी राजनीतिक दल महिलाओं को उनका वाजिब हक देने के लिए ईमानदार पहल करेंगे। सवाल है कि जो राजनीतिक दल हाल में महिलाओं को आरक्षण देने और परिसीमन के मुद्दे पर संसद में जमकर राजनीति कर रहे थे, वे टिकट वितरण के समय महिलाओं के हक को लेकर गंभीर क्यों नजर नहीं आए? उन्होंने महिलाओं को पर्याप्त संख्या में टिकट देने के प्रति उत्साह क्यों नहीं दिखाया? सही मायने में जब तक विधायिका में महिला आरक्षण व्यवस्था हकीकत में लागू नहीं होती, तस्वीर नहीं बदलने वाली है। सवाल यही है कि जब संसद में महिला आरक्षण विधेयक लागू करने में सभी राजनीतिक दलों ने अपनी प्रतिबद्धता जतायी है तो टिकट बांटते समय उनकी सोच क्यों नहीं बदलती? उनकी कथनी-करनी का यह अंतर कब तक जारी रहने वाला है? इस मुद्दे पर उनका संजीदा व्यवहार क्यों नहीं होता है? आखिर राजनीतिक दलों में ईमानदार इच्छाशक्ति क्यों नहीं नजर आती है? हालिया चुनाव परिणाम घोषित होने के बाद सिर्फ पांच फीसदी महिलाओं का चुना जाना बताता है कि इस दिशा में सभी राजनीतिक दलों का आधी दुनिया के प्रति एक जैसा नजरिया ही होता है। इसलिए जरूरी है कि महिलाएं जागरूक होकर अपने अधिकारों को पाने के लिए अपना संघर्ष तेज करें। अन्यथा राजनीतिक दल दशकों से लटके मुद्दे पर अपनी राजनीतिक सुविधा के अनुसार ही काम करेंगे। निश्चय ही हालिया विधानसभा के चुनाव परिणाम बताते हैं कि आधी दुनिया को जनप्रतिनिधि संस्थाओं में वाजिब हक दिलाने में राजनीतिक दलों की कवायद से, उनकी ईमानदारी को लेकर सवाल खड़े होना स्वाभाविक ही है।

भाजपा को परखने के औजार बदलने होंगे

"राष्ट्रवाद को लेकर राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ से लेकर अनेक विचारक स्पष्ट कर चुके हैं कि भारत का राष्ट्रवाद संकीर्ण पश्चिमी राष्ट्रवाद से सर्वदा विपरीत है। पश्चिमी मीडिया भारत को अक्सर यूरोपीय राजनीतिक अनुभवों के चश्मे से देखने की कोशिश करता है।

भारतीय जनता पार्टी की बंगाल जीत ने केवल राष्ट्रीय ही नहीं बल्कि अंतर्राष्ट्रीय राजनीतिक विश्लेषकों का भी ध्यान आकर्षित किया है। सभी अपने-अपने मापदण्डों पर इस चुनाव परिणाम को परख रहे हैं परन्तु पुराने ढर्रों पर चलते हुए फिर से गलती पर गलती दोहराते लगते हैं। यहां के विपक्ष की मानें तो यह एसआईआर के प्रयोग से निकला विजयमार्ग है तो विदेशी विश्लेषक फिर से जिंगल बैल जिंदल बैल की तरज पर साम्प्रदायिकता का गीत गाने लगे हैं। इन पांच राज्यों के चुनाव परिणाम बताते हैं कि भाजपा ने कहीं पहली बार पांव जमाए हैं, कहीं वह फिर से सत्ता में आई है तो कहीं उसने अपना जनाधार बढ़ाया है। अगर केरल जैसे राज्य में वामपंथी दलों को भाजपा के प्रभाव के डर से अयप्पा के दर्शन करने पड़ें, भाजपा के लिए राजनीतिक रूप से बंजर कहे जाने वाले बंगाल में कमल की फसल लहलाने लगे, द्रविड़ राजनीति के केंद्र तमिलनाडू में उसकी आहट सुनने लगे यह सहज ही अनुमान लगाया जा सकता है कि विरोधी इस दल को गलत औजारों से परख रहे हैं। विरोधी भूलते हैं कि देश का मतदाता मदिहीन नहीं है, वह सुशासन व विकास को अपनी पसंद बनाता जा रहा है। अगर कोई दल संविधान के अनुरूप काम करते हुए जनता की पसंद बन रहा है तो विरोधियों को भी अपनी सोच बदलनी होगी। भाजपा केंद्र और बहुत से राज्यों में वर्षों से शासन में है। अंधविरोध के चरम पर जा कर भी शासन व संवैधानिक व्यवस्था के किसी मान्य मापदण्ड पर विपक्ष अभी तक ऐसा कोई मुद्दा तराश नहीं पाया है जो जनता को भी मान्य हो। यहां तक कि प्रधानमंत्री कई बार चुटकी ले चुके हैं कि सार्वजनिक जीवन में विपक्ष उनकी कोई तथ्यात्मक आलोचना करने में असफल रहा है। दूसरी ओर पश्चिम बंगाल में भाजपा के सत्ता तक पहुंचते ही वैश्विक वैचारिक गलियारों में भी बेचैनी पैदा हो गई है। विदेशी मीडिया के बड़े हिस्से ने भारत में लोकतंत्र, अल्पसंख्यक अधिकार और चुनावी निष्पक्षता पर अचानक सवाल उठाने शुरू कर दिए। बीबीसी, न्यूयॉर्क टाइम्स, द गार्जियन और अल जजीरा जैसे मंचों पर फिर से यह विमर्श तेजी से गढ़ा जाने लगा कि भारत हिन्दू राष्ट्रवाद की ऐसी दिशा में बढ़ रहा है, जहां लोकतंत्र व बहुलता खतरे में है। विदेशी मीडिया में ज्यादा चर्चा बंगाल की है। सवाल यही है कि क्या चिंता वास्तव में लोकतंत्र की है या उस सियासी बदलाव की, जिसने दशकों पुराने वामपंथ और छद्मधर्मनिरपेक्षता के वैचारिक गढ़ को ध्वस्त कर दिया? जब भाजपा हारती है, तो विदेशी मीडिया भारत की लोकतांत्रिक परिपक्वता की तारीफ करता है, पर जैसे ही वह निर्णायक जनादेश लेकर आती है, तो लोकतांत्रिक प्रक्रिया संदेह और संस्थागत संकट की भाषा में बदल जाती है। श्रेष्ठभावना से ग्रसित पश्चिमी जगत कहीं यह तो नहीं मानता कि भारतीय मतदाताओं में राजनीतिक समझ का अभाव है ?

राष्ट्रवाद को लेकर राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ से लेकर अनेक विचारक स्पष्ट कर चुके हैं कि भारत का राष्ट्रवाद संकीर्ण पश्चिमी राष्ट्रवाद से सर्वदा विपरीत है। पश्चिमी मीडिया भारत को अक्सर यूरोपीय राजनीतिक अनुभवों के चश्मे से देखने की कोशिश करता है। वहां राष्ट्रवाद का अर्थ सत्ता विस्तार व नस्लीय वर्चस्व रहा है। जबकि भारत में राष्ट्रवाद सांस्कृतिक, सभ्यतागत पहचान और ऐतिहासिक आत्मबोध से जुड़ा है। इसे विदेशी मीडिया समझ नहीं पाता। इसीलिए वो हमारे सांस्कृतिक पुनर्जागरण को सीधे अल्पसंख्यक-बहुसंख्यकवाद से जोड़ देता है। यही कारण है कि बंगाल में भाजपा की जीत को पश्चिम के विश्लेषकों ने लोकतांत्रिक परिवर्तन के बजाय हिंदू राष्ट्रवादी कब्जे की तरह प्रस्तुत किया गया। एसआईआर पर अर्धसत्य दिखाते हुए कांग्रेस नेता राहुल गांधी ने परिणामों के बाद वोट चोरी का आरोप लगाया। ममता बनर्जी ने चुनाव आयोग को भाजपा का आयोग बताया। विदेशी मीडिया ने इन आरोपों को लगभग बिना तथ्य जांचे ही अपने विमर्श का आधार बना लिया। विशेष रूप से एसआईआर को मुस्लिम मतदाताओं को हटाने की साजिश के रूप में पेश किया गया, जबकि हटाए गए 91 लाख नामों में 63 प्रतिशत हिंदू मतदाता थे। बड़ी संख्या में नाम मृत, डुप्लिकेट, स्थायी रूप से स्थानांतरित या फर्जी पाए गए थे। इसके बावजूद विदेशी मीडिया के बड़े हिस्से ने केवल मुस्लिम वोट हटाए गए वाली जिद को प्रमुखता दी। देसी-विदेशी विश्लेषक यह भूल गए कि जिन 20 सीटों पर जाँच के बाद सबसे ज्यादा वोट काटे गए थे, उनमें से ज्यादातर पर टीएमसी ने ही कब्जा जमाया है। इन सीटों में समशेरगंज, लालगोला, भगवानगोला, रघुनाथगंज, मटियाबुर्ज, सूती, मोथाबाड़ी, गोलपोखर, मालतीपुर, चोपड़ा, सुजापुर, राजारहाट न्यू टाउन और बशीरहाट उत्तर शामिल हैं। इन सभी 13 सीटों पर ममता बनर्जी की पार्टी को जीत मिली है। अन्य सीटों की बात करें तो फरक्का सीट पर सबसे ज्यादा 38,222 वोट काटे गए थे, लेकिन वहाँ से कॉन्ग्रेस ने जीत दर्ज की। वहीं भाजपा को जंगीपुर, रतुआ, करनदिघी, केतुग्राम, मानिकचक और मोंतेश्वर जैसी 6 सीटों पर जीत मिली। यह अकेला आँकड़ा ही उस प्रोपेगेंडा की हवा निकाल देता है जिसमें यह दावा किया जा रहा था कि वोटर लिस्ट में सुधार से सिर्फ टीएमसी को नुकसान हुआ और भाजपा को फायदा पहुँचा।

अगर बड़े पैमाने पर देखें, तो जिन 187 सीटों पर 5,000 से ज्यादा वोटर्स के नाम काटे गए थे, वहां भाजपा ने 119 और टीएमसी ने 65 सीटों पर जीत दर्ज की। इन 187 सीटों में से 47 सीटें ऐसी थीं, जहाँ कटे हुए वोटों की संख्या जीत के अंतर से ज्यादा थी। भाजपा ने जो 119 सीटें जीतीं, उनमें से 28 सीटों पर जीत का अंतर कटे हुए वोटों से कम था। इन आँकड़ों से साफ है कि कई सीटों पर कांटे की टक्कर थी और वहाँ कटे हुए वोटों की संख्या जीत के मार्जिन से ज्यादा रही। लेकिन हार का पूरा ठीकरा सिर्फ वोटर लिस्ट सुधार की प्रक्रिया पर फोड़ देना और इसे ही हार की एकमात्र वजह बताना पूरी तरह से भ्रामक और गलत है। सच्चाई यह है कि देसी-विदेशी विश्लेषकों को नरेंद्र मोदी और भाजपा का बढ़ता राजनीतिक विस्तार विदेशी वैचारिक प्रतिष्ठानों की सबसे बड़ी बेचैनी बन चुका है। खास कर उन क्षेत्रों में यह जलन ज्यादा है जो 2024 के आम चुनावों में कांग्रेस को मिली थोड़ी राजनीतिक राहत को लेकर उत्साहित चला आरहा था। आज भाजपा अधिकांश राज्यों में प्रत्यक्ष या गठबंधन के जरिए सत्ता में है। ऐसे में भारत को हिन्दू राष्ट्रवादी लोकतंत्र और एकदलीय प्रभुत्व के खांचे में फिट करने की कोशिशें और तेज होती दिख रही हैं। परंतु बंगाल का फैसला यह भी साबित करता है कि भारत का मतदाता अपनी प्राथमिकताएं जमीन, अनुभव और आकांक्षाओं के आधार पर तय कर रहा है, न कि न्यूयॉर्क, लंदन या दोहा में बैठे नैरेटिव निर्माताओं की वैचारिक दृष्टि के अनुसार। विदेशी विश्लेषणों में बंगाल के चुनावी परिणाम को हिन्दुत्व के उभार के रंग में रंग दिया। लेकिन वहां की जनता की नाराजगी, आर्थिक बदहाली, भ्रष्टाचार, महिला उत्पीडन, सत्ताधारियों की हिंसा, उद्योगों का पलायन जैसे कारणों की अनदेखी कर गया। आज बंगाल पर कर्ज 7.7 लाख करोड़ रुपये से ऊपर पहुंच चुका है। हजारों कंपनियां राज्य छोड़ चुकी हैं। युवाओं का बड़ा वर्ग रोजगार के लिए पलायन कर रहा है। महानगरों में घरों में काम करने वाली अधिकतर महिलाएं बंगाली ही निकलती हैं। कट मनी, भर्ती घोटाले और सिंडिकेट संस्कृति जैसे मुद्दे वर्षों से जनता में असंतोष पैदा कर रहे थे। लेकिन देसी-विदेशी विश्लेषक उलझे हैं एसआईआर और बहुसंख्यकवाद के उभार में। इसी दकियानूसी सोच के आधार पर यह तत्व जनता में अप्रासंगिक हो रहे हैं और भाजपा का ग्राफ निरंतर बढ़ रहा है।

प्रेरणा

सत्य की स्याही से लिखी सफलता

जीवन में सफलता पाने के लिए लोग अक्सर बड़े साधनों, ऊँचे संपर्कों और असाधारण प्रतिभा की तलाश करते हैं, जबकि वास्तविक सफलता का मार्ग कई बार बहुत साधारण दिखाई देने वाले प्रयासों से शुरू होता है। ईमानदारी से किया गया छोटा प्रयास भी व्यक्ति को उस ऊँचाई तक पहुँचा सकता है, जहाँ केवल दिखावे और बनावट से पहुँचना संभव नहीं होता। मनुष्य जब अपने कार्य में सच्चाई जोड़ देता है, तब उसका प्रयास केवल काम नहीं रह जाता, बल्कि उसकी पहचान बन जाता है। यही कारण है कि दुनिया में वे लोग अधिक सम्मानित हुए, जिन्होंने अपने काम को पूरी निष्ठा और सच्चे मन से किया।

एक युवा लेखक के मन में भी कुछ ऐसा ही संघर्ष चल रहा था। उसके भीतर लिखने की तीव्र इच्छा थी। वह शब्दों के संसार में अपनी पहचान बनाना चाहता था, परंतु उसके मन में डर था कि कहीं उसके शब्द प्रभावशाली न हुए तो लोग उसका मज़ाक उड़ाएँगे। वह सोचता था कि महान लेखक बनने के लिए असाधारण भाषा और जटिल विचारों की आवश्यकता होती है। इसी उलझन में उसने प्रसिद्ध अमेरिकी लेखक Ernest Hemingway से सलाह लेने का निर्णय किया। वह यह जानना चाहता था कि लेखन की शुरुआत कैसे की जाए और डर को कैसे हराया जाए।

हेमिंग्वे ने उसकी बात बहुत ध्यान से सुनी। उन्होंने युवक को कोई कठिन नियम नहीं बताया, न ही भारी-भरकम साहित्यिक ज्ञान दिया। उन्होंने केवल इतना कहा कि हर दिन एक सच्चा वाक्य लिखो। ऐसा वाक्य, जो तुम्हारे मन के वास्तविक अनुभव, भावना या विचार को पूरी ईमानदारी से व्यक्त करे। युवक को यह सलाह बहुत आसान लगी। उसे लगा कि केवल एक वाक्य लिखना कौन-सी बड़ी बात है। पर जब उसने लिखने का प्रयास किया, तब उसे एहसास हुआ कि सच्चाई को सरल और स्पष्ट शब्दों में व्यक्त करना कितना कठिन होता है।

शुरुआत में वह बार-बार अपने वाक्य बदलता रहा। कभी उसे शब्द कमजोर लगते, कभी विचार अधूरा लगता। वह समझ गया कि मनुष्य अक्सर दूसरों को प्रभावित करने के लिए शब्दों का सहारा लेता है, लेकिन सच्चाई लिखने के लिए स्वयं से सामना करना पड़ता है। धीरे-धीरे उसने अपने अनुभवों को बिना सजावट के लिखना शुरू किया। उसने अपने डर, अपनी उम्मीदें, अपनी असफलताएँ और अपने सपनों को शब्द दिए। कुछ दिनों बाद उसे महसूस हुआ कि उसके वाक्य पहले से अधिक प्रभावशाली और जीवंत हो गए हैं। उनमें बनावट नहीं थी, पर उनमें सच्चाई थी, और यही सच्चाई उन्हें विशेष बना रही थी।

तब हेमिंग्वे ने उसे समझाया कि महान लेखन जटिल शब्दों से नहीं, बल्कि सच्चाई से जन्म लेता है। यदि विचार ईमानदार हों, तो शब्द स्वयं रास्ता बना लेते हैं। उन्होंने कहा कि मनुष्य की सबसे बड़ी ताकत उसकी सच्चाई है। जब कोई व्यक्ति अपने काम में पूरी निष्ठा रखता है, तब उसका कार्य दूसरों के हृदय तक पहुँचता है। दिखावे से प्रभावित लोग कुछ समय के लिए प्रशंसा पा सकते हैं, लेकिन स्थायी सम्मान केवल वही पाते हैं, जिनके प्रयासों में ईमानदारी होती है।

यह बात केवल लेखन तक सीमित नहीं है। जीवन के हर क्षेत्र में यही सिद्धांत लागू होता है। एक विद्यार्थी यदि पूरी ईमानदारी से अध्ययन करता है, तो उसकी समझ गहरी होती जाती है। एक कलाकार यदि अपने मन की सच्ची भावनाओं को कला में उतारता है, तो उसकी रचना लोगों के दिलों को छू लेती है। एक व्यापारी यदि ईमानदारी से व्यापार करता है, तो लोगों का विश्वास जीत लेता है। इसी प्रकार एक साधारण कर्मचारी भी यदि अपने कार्य को पूरी निष्ठा से करे, तो वह धीरे-धीरे सबका सम्मान प्राप्त कर लेता है।

आज के समय में लोग बहुत जल्दी सफलता चाहते हैं। वे शॉर्टकट खोजते हैं और बाहरी चमक को ही उपलब्धि मान लेते हैं। सोशल मीडिया और दिखावे की दुनिया में सच्चाई कई बार पीछे छूटती दिखाई देती है। लोग अपनी वास्तविकता से अधिक अपनी छवि को सुंदर बनाने में लगे रहते हैं। लेकिन समय अंततः उसी व्यक्ति की परीक्षा लेता है, जिसके भीतर वास्तविकता होती है। झूठ और दिखावा थोड़े समय तक टिक सकते हैं, पर सच्चाई लंबे समय तक प्रकाश देती है। ईमानदार प्रयास धीरे-धीरे फल देता है, पर उसका परिणाम स्थायी और गहरा होता है।

मनुष्य के भीतर अक्सर यह डर रहता है कि यदि वह अपनी वास्तविकता दिखाएगा तो लोग उसे कमजोर समझेंगे। इसी कारण वह अपने विचारों और भावनाओं पर नकली आवरण चढ़ा लेता है। परंतु वास्तविक शक्ति उसी में होती है, जो स्वयं को स्वीकार कर सके। जब व्यक्ति अपने भीतर की सच्चाई को पहचान लेता है, तब उसका आत्मविश्वास भी बढ़ने लगता है। वह दूसरों की नकल करने के बजाय अपनी मौलिकता को महत्व देता है। यही मौलिकता आगे चलकर उसकी सबसे बड़ी पहचान बनती है। ईमानदार प्रयास का एक और महत्वपूर्ण पहलू यह है कि वह व्यक्ति को भीतर से संतुष्टि देता है। जब हम केवल दूसरों को प्रभावित करने के लिए कार्य करते हैं, तब हमारे भीतर हमेशा असुरक्षा बनी रहती है। लेकिन जब हमारा प्रयास सच्चा होता है, तब परिणाम चाहे तुरंत मिले या देर से, मन में शांति बनी रहती है। व्यक्ति जानता है कि उसने पूरी निष्ठा से अपना कार्य किया है। यही संतोष उसे आगे बढ़ने की शक्ति देता है।

इतिहास गवाह है कि संसार के अधिकांश महान व्यक्तियों ने अपनी यात्रा छोटे लेकिन सच्चे प्रयासों से शुरू की थी। उन्होंने शुरुआत में बड़े परिणामों की चिंता नहीं की, बल्कि अपने कार्य की गुणवत्ता और ईमानदारी पर ध्यान दिया। यही कारण है कि उनकी सफलता केवल व्यक्तिगत उपलब्धि नहीं बनी, बल्कि दूसरों के लिए प्रेरणा भी बन गई। वे जानते थे कि किसी भी मजबूत इमारत की नींव गहरी और सच्ची होनी चाहिए। यदि आधार कमजोर हो, तो ऊँचाई अधिक समय तक टिक नहीं सकती।

इस कहानी का संदेश अत्यंत सरल लेकिन गहरा है। सफलता केवल प्रतिभा या अवसर से नहीं मिलती, बल्कि उस ईमानदारी से मिलती है, जो व्यक्ति अपने प्रयासों में जोड़ता है। हर दिन किया गया छोटा सच्चा प्रयास धीरे-धीरे व्यक्ति को निखारता है। जैसे एक-एक बूंद से सागर बनता है, वैसे ही छोटे-छोटे ईमानदार प्रयास मिलकर महान सफलता का निर्माण करते हैं। इसलिए मनुष्य को अपने कार्य में दिखावे से अधिक सच्चाई को महत्व देना चाहिए, क्योंकि अंततः वही सच्चाई उसकी सबसे बड़ी शक्ति और पहचान बनती है।

सम्राट चौधरी सरकार के मंत्रिमंडल विस्तार के राजनीतिक निहितार्थ को समझिए

बिहार में मुख्यमंत्री सम्राट चौधरी के मंत्रिमंडल विस्तार के कई गहरे राजनीतिक मायने हैं। यह केवल सत्ता संचालन का मामला नहीं, बल्कि 2029 लोकसभा और आगामी बिहार विधानसभा चुनावों की व्यापक रणनीति का हिस्सा माना जा रहा है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और गृह मंत्री अमित शाह की मौजूदगी ने इसे राष्ट्रीय स्तर का शक्ति प्रदर्शन बना दिया। पश्चिम बंगाल और असम में भाजपा को मिली अभूतपूर्व विजय से बिहार का महत्व और भी बढ़ चुका है, क्योंकि पश्चिम, उत्तर, मध्य भारत के बाद पूर्वी भारत में भाजपा ने गजब का विस्तार किया है। इसे बरकरार रखने में बिहार की अहम भूमिका होगी।राजनीतिक विश्लेषकों के मुताबिक, सम्राट मंत्रिमंडल विस्तार का सबसे बड़ा राजनीतिक संदेश यह है कि बिहार में भाजपा अब "सहयोगी दल" नहीं बल्कि "मुख्य धुरी" बनना चाहती है। यही वजह है कि वह एनडीए के सामाजिक समीकरणों को फिर से पुनर्गठित कर रहा है। खासकर 'नीतीश युग' से 'सम्राट युग' की ओर नियंत्रित लेकिन सधे हुए कदमों से वह कदमताल भर रही है, जिसका सारा श्रेय मुख्यमंत्री सम्राट चौधरी के साहस, समर्पण, और सहृदयता को जाता है, जिससे मोदी-शाह का काम आसान हुआ।

देखा जाए तो भाजपा आम चुनाव 2029 की राजनीति की नींव अभी से रखी जा रही है। इसके लिए नीतीश सरकार के जातीय समीकरण को अक्षुण्ण रखते हुए सामाजिक न्याय और हिंदुत्व को नई धार दे चुकी है। इससे बिहार विधानसभा चुनाव 2030 में भी बहुत फायदा मिलेगा। वहीं, पूर्वी भारत के लिए भविष्य की चुनौतियों से निपटने और खासकर ग्रेटर बंगलादेश के सपनों को नेस्तनाबूद करने की अंदरूनी तैयारी भी भाजपा ने तेज कर दी है, जिसमें बिहार, पश्चिम बंगाल, उड़ीसा असम, के अलावा त्रिपुरा, मेघालय, अरुणाचल प्रदेश, मणिपुर आदि की भी अहम भूमिका रहेगी।

युवा और कर्मठ राजनेता सम्राट चौधरी को मुख्यमंत्री बनाकर भाजपा ने बिहार में "पोस्ट-नीतीश युग" की शुरुआत का संकेत दिया है, लेकिन अब मंत्रिमंडल विस्तार के जरिए पार्टी नेतृत्व द्वारा यह संदेश दिया गया है कि पार्टी बिहार में अपना स्वतंत्र नेतृत्व खड़ा कर रही है। इसमें नए और आक्रामक राजनीतिक चेहरों को जगह दी गई है। विभागों का बंटवारा भी काफी सूझबूझ से किया गया है। इसका श्रेय टीम मोदी-शाह-चौधरी को ही जाता है।

सम्राट कैबिनेट के गठन में राजनीतिक रूप से महत्वपूर्ण ओबीसी, ईबीसी, दलित, महादलित, सवर्ण, निषाद, कुशवाहा, पासवान और क्षेत्रीय संतुलन का विशेष ध्यान रखा गया है। वहीं, अकस्मात लाए हुए यूजीसी बिल के साइड इफेक्ट्स से भी एनडीए को बचाने की पुरजोर कोशिश दिखी। लिहाजा, इसे भाजपा-जदयू गठबंधन की संयुक्त "सामाजिक समीकरण साधो" रणनीति का अहम हिस्सा माना जा रहा है। जानकारों के मुताबिक, विशेष रूप से, ओबीसी और ईबीसी वर्ग को बड़ा प्रतिनिधित्व के दृष्टिगत अतिपिछड़ा वोट बैंक पर पकड़ मजबूत करने की कोशिश के साथ साथ दलित-पासवान समीकरण को एनडीए में स्थिर रखने का प्रयास करते हुए सीमांचल और मिथिलांचल को राजनीतिक संदेश दिया गया है। इससे नए चेहरों की भी किस्मत खुली।

रिपोर्टों के अनुसार भाजपा और जदयू के बीच लगभग बराबरी का फार्मूला अपनाया गया। इससे यह संकेत गया कि गठबंधन में जदयू अभी भी सम्मानजनक स्थिति में है, जबकि भाजपा नेतृत्वकारी भूमिका में आगे बढ़ रही है। आपको बता दें कि भाजपा और जदयू की दोस्ती दोनों दलों के लिए बहुत सुखदायी समझी जाती है। तभी तो एक नहीं बल्कि दो-दो बार नीतीश कुमार एनडीए से बाहर गए, लेकिन भाजपा ने उन्हें बार-बार मौका देकर नीतीश कुमार की इज्जत बनाए रखी। वहीं, उनकी पसंद का मुख्यमंत्री सम्राट चौधरी को बनाकर, भाजपा में ही नीतीश कुमार पैदा करने की अहम चाल चली, जिसका फायदा क्रमबद्ध रूप से समझ में आएगा।

पूर्व मुख्यमंत्री नीतीश कुमार के पुत्र निशांत कुमार को मंत्रिमंडल में बतौर स्वास्थ्य मंत्री शामिल किया जाना बेहद प्रतीकात्मक कदम माना जा रहा है। इसके लिए पार्टी ने अपने पूर्व स्वास्थ्य मंत्री मंगल पांडेय तक को दरकिनार करना मुनासिब समझी। इससे जदयू के भीतर उत्तराधिकार राजनीति को संस्थागत रूप देने का संकेत मिलता है। इससे भाजपा का लवकुश समीकरण काफी मजबूत होगा। इसप्रकार यह कदम तीन संदेश देता है: एक, जदयू का भविष्य "परिवार-केंद्रित नेतृत्व" की ओर जा सकता है। दो, भाजपा फिलहाल नीतीश परिवार के साथ टकराव नहीं चाहती। और तीसरा, गठबंधन में स्थिरता बनाए रखने की कोशिश है। गांधी मैदान, पटना में बड़े आयोजन और शीर्ष केंद्रीय नेतृत्व की अहम मौजूदगी यह दर्शाती है कि भाजपा बिहार को पूर्वी भारत की राजनीति का केंद्रीय मैदान बना रही है। यह संदेश विपक्ष, खासकर तेजस्वी यादव और महागठबंधन को दिया गया कि एनडीए अभी भी संगठनात्मक और चुनावी रूप से मजबूत है। इसलिए इंडिया गठबंधन अपना कुनबा संभाले न कि एनडीए गठबंधन पर बक्र दृष्टि रखे। इससे उन्हें कोई फायदा नहीं होने वाला है। मुख्यमंत्री सम्राट चौधरी ने अपनी कैबिनेट में कई नए चेहरों को मंत्री बनाकर भाजपा और जदयू दोनों के मिशन "जनरेशन शिफ्ट" का संकेत दिया है। इससे एंटी-इंकम्बेंसी कम करने और युवा वोटरों को आकर्षित करने की कोशिश दिखती है। ऐसा इसलिए कि वर्तमान राजनीति में किसानों, मजदूरों, कारीगरों के साथ साथ महिलाओं और युवाओं की भूमिका बढ़ी है। आजकल युवा ड्राइविंग फोर्स की तरह निर्णायक भूमिका निभा रहे हैं। पूर्वी भारत में भाजपा का आधार जागरूक युवा ही हैं। इसलिए भाजपा उनके सपनों को पूरा करने में जुटी रहती है। यदि ऐसा स्वप्न साकार होता है तो इससे न केवल पूर्वी बिहार, बल्कि मध्य बिहार, उत्तर बिहार और दक्षिण बिहार में भी भाजपा को मजबूती मिलेगी।

अभियान

मां गंगा के द्वार पर श्रद्धा की नई परीक्षा

देवभूमि उत्तराखंड की पवित्र वादियों में जब भी चारधाम यात्रा का शुभारंभ होता है, तब ऐसा प्रतीत होता है मानो स्वयं देवता पृथ्वी पर उतर आए हों। हिमालय की बर्फीली चोटियों के बीच गूंजते शंख, घंटियां और "हर हर महादेव" के जयकारे वातावरण को दिव्यता से भर देते हैं। चारों ओर केवल भक्ति का प्रकाश दिखाई देता है। कोई नंगे पांव मां गंगा के दर्शन के लिए चल रहा होता है, तो कोई वृद्ध अवस्था में भी हाथ जोड़कर भगवान का स्मरण करते हुए कठिन पहाड़ी रास्तों को पार कर रहा होता है। चारधाम यात्रा केवल एक धार्मिक यात्रा नहीं, बल्कि आत्मा की पुकार और ईश्वर से मिलन का पवित्र अवसर मानी जाती है। इस वर्ष अक्षय तृतीया के पावन पर्व पर जैसे ही चारधाम यात्रा 2026 आरंभ हुई, वैसे ही लाखों श्रद्धालुओं का सैलाब गंगोत्री और यमुनोत्री धाम की ओर उमड़ पड़ा। हर किसी के हृदय में केवल एक ही इच्छा थी—मां गंगा के चरणों में पहुंचकर जीवन को धन्य कर लेना।

गंगोत्री धाम का नाम सुनते ही मन श्रद्धा से भर उठता है। यह वही पावन स्थान है, जहां से मां गंगा की दिव्य धारा पृथ्वी पर अवतरित हुई मानी जाती है। पुराणों में वर्णन मिलता है कि राजा भगीरथ की कठोर तपस्या से प्रसन्न होकर मां गंगा स्वर्ग से धरती पर आई थीं, ताकि उनके पूर्वजों को मुक्ति मिल सके। तभी से मां गंगा केवल एक नदी नहीं रहीं, बल्कि सनातन संस्कृति में मोक्षदायिनी माता के रूप में पूजित हुईं। गंगोत्री की यात्रा करते समय श्रद्धालु केवल पहाड़ों और मंदिरों के दर्शन नहीं करते, बल्कि वे अपने भीतर छिपे अहंकार, पाप और अशुद्धियों को भी मां गंगा के चरणों में समर्पित करने का प्रयास करते हैं। इस बार गंगोत्री धाम में एक नई परंपरा और नियम को लेकर पूरे देश में चर्चा हो रही है। मंदिर की व्यवस्था संभालने वाली समिति ने यह निर्णय लिया है कि मंदिर में प्रवेश करने वाले श्रद्धालुओं को पंचगव्य ग्रहण करना होगा। इस नियम को केवल एक धार्मिक प्रक्रिया नहीं माना जा रहा, बल्कि इसे आत्मिक शुद्धि और सनातन परंपराओं की रक्षा से जोड़कर देखा जा रहा है। जैसे ही यह खबर सामने आई, भक्तों के मन में जिज्ञासा भी बढ़ी और श्रद्धा भी। कई लोग इसे मां गंगा की नगरी में प्रवेश से पहले आत्मा की पवित्रता का एक विशेष माध्यम मान रहे हैं।

सनातन धर्म में पंचगव्य का महत्व अत्यंत प्राचीन और पवित्र माना गया है। पंचगव्य पांच पवित्र तत्वों से मिलकर बनता है—गाय का दूध, दही, घी, गोमूत्र और गोबर। इन पांचों तत्वों को भारतीय संस्कृति में दिव्यता का प्रतीक माना गया है। मान्यता है कि गाय में समस्त देवी-देवताओं का वास होता है, इसलिए उससे प्राप्त प्रत्येक वस्तु पवित्र और कल्याणकारी मानी जाती है। इस बार पंचगव्य के साथ गंगाजल को भी जोड़ा गया है, जिससे इसकी आध्यात्मिक महत्ता और बढ़ गई है। धार्मिक मान्यताओं के अनुसार पंचगव्य केवल शरीर की शुद्धि का साधन नहीं, बल्कि मन और आत्मा को सात्विक बनाने का माध्यम भी है। गंगोत्री मंदिर समिति का मानना है कि तीर्थ केवल घूमने-फिरने का स्थान नहीं है। यह तप, श्रद्धा और आत्मसंयम की भूमि है। आज के समय में कई लोग तीर्थयात्रा को केवल पर्यटन की तरह देखने लगे हैं। लोग वहां जाकर तस्वीरें लेते हैं, वीडियो बनाते हैं और सोशल मीडिया पर दिखावे में अधिक रुचि लेने लगे हैं। ऐसे समय में गंगोत्री धाम का यह नया नियम भक्तों को यह स्मरण कराता है कि तीर्थ का वास्तविक उद्देश्य आत्मा को ईश्वर के निकट ले जाना है। जब श्रद्धालु पंचगव्य ग्रहण कर मंदिर में प्रवेश करेंगे, तब उनके भीतर श्रद्धा और विनम्रता का भाव और अधिक जागृत होगा।

कहा जाता है कि मां गंगा केवल जल की धारा नहीं हैं, बल्कि वह स्वयं करुणा और मुक्ति की मूर्ति हैं। जो भक्त सच्चे मन से उनके दर्शन करता है, उसके जीवन के दुख और मानसिक अशांति धीरे-धीरे समाप्त होने लगती है। गंगोत्री धाम पहुंचते ही जब श्रद्धालु भागीरथी नदी की कलकल ध्वनि सुनते हैं, तो उनका मन सांसारिक चिंताओं से दूर हो जाता है। बर्फ से ढके पर्वतों के बीच बहती मां गंगा की निर्मल धारा मानो यह संदेश देती है कि जीवन में चाहे कितनी भी अशुद्धियां हों, भक्ति और विश्वास उन्हें दूर कर सकते हैं। इस बार लागू किया गया पंचगव्य नियम विशेष रूप से उन लोगों के लिए रखा गया है, जो सनातन धर्म की परंपराओं को मानते हैं। सिख, जैन और बौद्ध धर्म को भी भारतीय आध्यात्मिक संस्कृति से जुड़ा माना गया है, इसलिए उनके लिए अलग से किसी प्रकार की रोक की बात नहीं कही गई है। हालांकि यह नियम केवल गंगोत्री धाम में लागू किया गया है, लेकिन यमुनोत्री धाम में भी इसी प्रकार की व्यवस्था पर विचार चल रहा है। वहीं केदारनाथ और बद्रीनाथ धाम की समितियां पहले से ही मंदिरों की पवित्रता बनाए रखने के लिए कई सख्त नियम लागू कर चुकी हैं। चारधाम यात्रा का महत्व केवल धार्मिक दृष्टि से नहीं, बल्कि आध्यात्मिक दृष्टि से भी अत्यंत गहरा है। कहा जाता है कि जो व्यक्ति श्रद्धा और विश्वास के साथ बद्रीनाथ, केदारनाथ, गंगोत्री और यमुनोत्री के दर्शन करता है, उसका जीवन पवित्र हो जाता है। हिमालय की गोद में बसे ये चारों धाम मनुष्य को यह एहसास कराते हैं कि संसार का वास्तविक सुख भौतिक वस्तुओं में नहीं, बल्कि ईश्वर की भक्ति में है। जब भक्त कठिन रास्तों से होकर मंदिर तक पहुंचता है, तब उसके भीतर धैर्य, संयम और समर्पण का भाव उत्पन्न होता है।

गंगोत्री धाम में इस नई व्यवस्था का एक संदेश यह भी है कि सनातन धर्म केवल पूजा-पाठ तक सीमित नहीं है, बल्कि वह जीवन की शुद्धता और अनुशासन पर भी आधारित है। तीर्थ यात्रा पर जाने वाले व्यक्ति को केवल बाहरी रूप से नहीं, बल्कि भीतर से भी पवित्र होना चाहिए। जब मन में क्रोध, अहंकार, छल और नकारात्मकता भरी हो, तब केवल मंदिर जाकर दर्शन कर लेना पर्याप्त नहीं माना जाता। सच्ची तीर्थयात्रा वही है, जिसमें व्यक्ति अपने भीतर के अंधकार को छोड़कर ईश्वर की ओर बढ़े। आज की आधुनिक दुनिया में मनुष्य तेजी से भौतिक सुखों की ओर आकर्षित हो रहा है। जीवन में भागदौड़ इतनी बढ़ गई है कि लोगों के पास स्वयं के लिए भी समय नहीं बचता। ऐसे समय में चारधाम यात्रा आत्मा को शांति देने वाला एक दिव्य अवसर बन जाती है। जब श्रद्धालु गंगोत्री धाम पहुंचकर मां गंगा के चरणों में बैठते हैं, तब उन्हें ऐसा अनुभव होता है मानो सारी चिंताएं मां की गोद में समर्पित हो गई हों। वहां की ठंडी हवाएं, मंदिरों की घंटियां और साधु-संतों के मंत्रोच्चार मन को भीतर तक पवित्र कर देते हैं। यात्रा पर जाने वाले श्रद्धालुओं के लिए यह आवश्यक है कि वे यात्रा से पहले सभी नियमों और दिशा-निर्देशों की जानकारी प्राप्त करें। प्रशासन और मंदिर समिति द्वारा जारी गाइडलाइन का पालन करना न केवल सुरक्षा के लिए जरूरी है, बल्कि यह तीर्थ की मर्यादा बनाए रखने के लिए भी आवश्यक है। यात्रा से पहले पंजीकरण करवाना, स्वास्थ्य की जांच करना और मौसम की जानकारी लेना अत्यंत महत्वपूर्ण है। हिमालयी क्षेत्रों में मौसम अचानक बदल जाता है, इसलिए सावधानी और अनुशासन यात्रा का महत्वपूर्ण हिस्सा हैं।

मां गंगा की महिमा का वर्णन शब्दों में करना संभव नहीं है। वह केवल नदी नहीं, बल्कि करोड़ों लोगों की आस्था और विश्वास की आधार हैं। जब कोई भक्त श्रद्धा से "गंगे च यमुने चैव" का उच्चारण करता है, तब उसके भीतर एक अद्भुत शांति उत्पन्न होती है। गंगोत्री धाम की यह नई व्यवस्था भी उसी शांति और पवित्रता को बनाए रखने का प्रयास प्रतीत होती है। यह नियम भक्तों को यह संदेश देता है कि ईश्वर के द्वार पर पहुंचने से पहले मनुष्य को अपने भीतर की अशुद्धियों को भी त्यागना चाहिए।

चारधाम यात्रा का वास्तविक अर्थ केवल मंदिरों के दर्शन करना नहीं, बल्कि स्वयं को बदलना है। जब भक्त कठिन मार्गों से गुजरते हुए भगवान के द्वार तक पहुंचता है, तब वह समझ पाता है कि जीवन का सबसे बड़ा सुख ईश्वर के निकट होने में है। मां गंगा के पवित्र जल की एक बूंद भी मनुष्य को भीतर से बदल देने की शक्ति रखती है। इसलिए गंगोत्री धाम का यह नया नियम केवल परंपरा नहीं, बल्कि भक्ति की गहराई को समझाने वाला एक आध्यात्मिक संदेश है।

जो श्रद्धालु इस वर्ष चारधाम यात्रा पर जाने की तैयारी कर रहे हैं, उनके लिए यह अवसर केवल यात्रा का नहीं, बल्कि आत्मा की शुद्धि का भी है।

RNI No. GJHIN/25/A2786 Printed, Published & Owned by RAGINI JIGNESHKUMAR VAGHELA and Printed By (1) JIGNESH RASHIKBHAI GAJJAR at Vansh Corporation, A/8, Shayona Golden Estate, Shahibag, Ahmedabad - 380 004
(2) DESAI RAHUL MAHESHBHAI at Bhavani Offset, "Bhatiya Ni Wadi, Opp Kalupur Railway Station, Kalupur, Ahmedabad-380 002. (3) HADIK MAHESHBHAI DESAI at Bhoomi Offset, "Bhatiya Ni Wadi, Opp Kalupur Railway Station, Kalupur, Ahmedabad-380 002
and Published from B/13, Sneh Plaza Shopping Center, I.O.C. Road, Chandkheda, Ahmedabad - 382 424. Editor : JIGNESHKUMAR PATHABHAI VAGHELA
Regd.Office : B/13, Sneh Plaza Shopping Center, I.O.C. Road, Chandkheda, Ahmedabad - 382 424 Gujarat,India. Phone : (o) 7698333307 (M) 8485951747,7096333307
Email:navsarjansanskruti2016@gmail.com*navsarjansanskruti2016@yahoo.com*Website : www.navsarjansanskruti.com

सोमनाथ स्वाभिमान पर्व: आस्था, संघर्ष और सांस्कृतिक पुनर्जागरण का ऐतिहासिक उत्सव, 11 मई को सोमनाथ पहुंचेंगे प्रधानमंत्री मोदी

नई दिल्ली। अरब सागर के तट पर स्थित Somnath Temple केवल एक मंदिर नहीं, बल्कि भारतीय सभ्यता, सांस्कृतिक चेतना और अटूट आस्था का जीवंत प्रतीक माना जाता है। सदियों के संघर्ष, आक्रमणों और पुनर्निर्माण की गाथा समेटे यह मंदिर एक बार फिर राष्ट्रीय चर्चा के केंद्र में है। इस वर्ष "सोमनाथ स्वाभिमान पर्व" के माध्यम से मंदिर पर हुए पहले बड़े हमले के 1,000 वर्ष और स्वतंत्र भारत में इसके पुनर्निर्माण के बाद दोबारा उद्घाटन के 75 वर्ष पूरे होने का विशेष आयोजन किया जा रहा है। इसी ऐतिहासिक अवसर पर प्रधानमंत्री Narendra Modi 11 मई को सोमनाथ पहुंचेंगे और भव्य समारोह में भाग लेंगे।

गुजरात के सौराष्ट्र क्षेत्र में प्रभास पाटन स्थित सोमनाथ मंदिर को भगवान शिव के 12 ज्योतिर्लिंगों में प्रथम और सर्वाधिक पवित्र माना जाता है। हिंदू धार्मिक ग्रंथों और शिव पुराण में वर्णित यह मंदिर केवल शिव भक्ति का केंद्र नहीं, बल्कि भारतीय आध्यात्मिक परंपरा की सबसे प्राचीन और गौरवशाली धरोहरों में शामिल है। द्वादश ज्योतिर्लिंग स्तोत्र में सोमनाथ का पहला स्थान इसकी विशेष महत्ता को दर्शाता है। मान्यता है कि यहां भगवान शिव स्वयं ज्योतिर्लिंग रूप में विराजमान हैं और इसी कारण देश-विदेश से करोड़ों श्रद्धालु यहां दर्शन के लिए पहुंचते हैं।

सोमनाथ मंदिर का इतिहास केवल भक्ति और श्रद्धा की कहानी नहीं, बल्कि संघर्ष और पुनर्जन्म की ऐसी गाथा है जिसने भारतीय मानस को सदियों तक प्रेरित किया है। वर्ष 1026 में इस मंदिर पर पहला बड़ा हमला हुआ था। इसके बाद 11वीं से 18वीं शताब्दी के बीच कई बार मंदिर को तोड़ा गया, लूटा गया और ध्वस्त करने की कोशिश की गई। लेकिन हर बार भक्तों, राजाओं और समाज ने इसे फिर से खड़ा किया। यही कारण है कि सोमनाथ को भारतीय सांस्कृतिक चेतना में "अजेय आत्मा" का प्रतीक माना जाता है।

इतिहासकारों के अनुसार 12वीं शताब्दी में राजा कुमारपाल ने मंदिर का पुनर्निर्माण कराया। इसके बाद जूनागढ़ के शासकों और इंदौर की मराठा महारानी Ahilyabai Holkar ने भी सोमनाथ के पुनरुद्धार और संरक्षण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। हर दौर में मंदिर को बचाने और पुनर्स्थापित करने के प्रयास यह दिखाते हैं कि सोमनाथ केवल एक धार्मिक स्थल नहीं, बल्कि भारतीय अस्मिता और सांस्कृतिक गौरव का केंद्र रहा है।

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद सोमनाथ के पुनर्निर्माण को नए भारत की सांस्कृतिक पुनर्स्थापना के रूप में देखा गया। देश के पहले गृह मंत्री और लौह पुरुष Sardar Vallabhbhai Patel ने 1947 में सोमनाथ के खंडहरों का दौरा किया और इसके पुनर्निर्माण का संकल्प लिया। उनका मानना था कि सोमनाथ का पुनर्निर्माण केवल एक मंदिर का पुनर्निर्माण नहीं, बल्कि भारत के आत्मविश्वास और

सांस्कृतिक गौरव की पुनर्स्थापना है। इसके बाद जनसहभागिता और राष्ट्रीय संकल्प के साथ वर्तमान मंदिर का निर्माण कैलाश महामेरु प्रसाद वास्तुशैली में किया गया।

11 मई 1951 को भारत के प्रथम राष्ट्रपति Rajendra Prasad ने सोमनाथ मंदिर का पुनः उद्घाटन किया। उस ऐतिहासिक क्षण को स्वतंत्र भारत के सांस्कृतिक पुनर्जन्म के रूप में देखा गया था। अब 75 वर्ष बाद "सोमनाथ स्वाभिमान पर्व" उसी ऐतिहासिक स्मृति को पुनर्जीवित कर रहा है। यह आयोजन केवल धार्मिक कार्यक्रम नहीं, बल्कि भारत की सांस्कृतिक दृढ़ता और आत्मगौरव का उत्सव माना जा रहा है।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी, जो Shree Somnath Trust के अध्यक्ष भी हैं, लगातार सोमनाथ को भारत की "अजेय आत्मा" का प्रतीक बताते रहे हैं। उन्होंने "विकास भी, विरासत भी" के मंत्र के साथ सोमनाथ में अगले 1,000 दिनों तक विशेष पूजा और आध्यात्मिक आयोजनों की घोषणा की है। प्रधानमंत्री ने लोगों से इस ऐतिहासिक काल में सोमनाथ आने और भारतीय सांस्कृतिक चेतना के इस पर्व का हिस्सा बनने की अपील भी की है।

जनवरी 2026 में भी प्रधानमंत्री मोदी ने सोमनाथ स्वाभिमान पर्व के कार्यक्रमों में हिस्सा लिया था। उस दौरान 72 घंटे तक निरंतर ओंकार मंत्र जाप आयोजित किया गया, जिसमें देशभर से संतों और श्रद्धालुओं ने भाग लिया। राष्ट्र की समृद्धि और विश्व शांति के लिए विशेष पूजा-अर्चना भी की गई। प्रभास पाटन में 108 घोड़ों के साथ भव्य शौर्य यात्रा निकाली गई, जिसे मंदिर की रक्षा में बलिदान देने वाले वीर योद्धाओं को समर्पित किया गया था।

सोमनाथ की कहानी उन वीरों के बलिदान से भी जुड़ी है जिन्होंने मंदिर की रक्षा के लिए अपने प्राण न्योछावर कर दिए। इनमें वीर हमिरजी गोहिल का नाम विशेष श्रद्धा से लिया जाता है। मान्यता है कि 1299 में जफर खान के हमले के दौरान उन्होंने सोमनाथ की रक्षा करते हुए वीरगति प्राप्त की थी। आज भी उन्हें मंदिर की रक्षा और स्वाभिमान के प्रतीक के रूप में याद किया जाता है।

"चलो चलें सोमनाथ" अभियान के तहत दिल्ली के सफदरजंग रेलवे स्टेशन से 30 अप्रैल 2026 को विशेष ट्रेन रवाना की गई थी, जिसमें 1,300 से अधिक श्रद्धालु शामिल हुए। यह यात्रा केवल धार्मिक यात्रा नहीं, बल्कि सांस्कृतिक चेतना से जुड़ा अभियान बन गई। 1 मई को यात्रा सोमनाथ पहुंची, जहां भव्य आरती, सांस्कृतिक कार्यक्रमों और लाइट एंड साउंड शो का आयोजन किया गया। इन आयोजनों ने श्रद्धालुओं को मंदिर के गौरवशाली इतिहास और आध्यात्मिक विरासत से जोड़ने का काम किया।

अरब सागर के किनारे स्थित सोमनाथ मंदिर अपनी स्थापत्य भव्यता के लिए भी विश्वभर में प्रसिद्ध है। मंदिर का 150 फीट ऊंचा शिखर दूर से ही श्रद्धालुओं को आकर्षित करता है। इसके ऊपर स्थापित 10 टन का विशाल कलश इसकी भव्यता को और बढ़ाता है। मंदिर परिसर में लगे 1666 स्वर्ण कलश और 14,200 ध्वज इसकी आध्यात्मिक और सांस्कृतिक पहचान को विशिष्ट बनाते हैं। हर वर्ष यहां लगभग 92 से 97 लाख श्रद्धालु दर्शन के लिए पहुंचते हैं।

सोमनाथ ट्रस्ट ने धार्मिक गतिविधियों से आगे बढ़कर सामाजिक और मानवीय क्षेत्रों में भी उल्लेखनीय कार्य किए हैं। ट्रस्ट शिक्षा, स्वास्थ्य, महिला सशक्तीकरण और पर्यावरण संरक्षण जैसे क्षेत्रों में सक्रिय भूमिका निभा रहा है। ग्रामीण युवाओं और महिलाओं के लिए कंप्यूटर शिक्षा, सिलाई प्रशिक्षण, डिजिटल साक्षरता और रोजगार उन्मुख कार्यक्रम चलाए जा रहे हैं। "स्कूल ऑन व्हील्स" जैसी पहल के माध्यम से गांवों तक डिजिटल शिक्षा पहुंचाई जा रही है।

कोविड-19 महामारी के दौरान भी ट्रस्ट ने व्यापक सहायता कार्य किए। पहली लहर में 8.73 करोड़ रुपये और दूसरी लहर में 2.21 करोड़ रुपये की सहायता प्रदान की गई। इसके अलावा मुख्यमंत्री राहत कोष में 1 करोड़ रुपये का योगदान भी दिया गया। ऑक्सीजन प्लांट स्थापित करने, मेडिकल सहायता पहुंचाने और जरूरतमंद परिवारों तक राशन पहुंचाने में भी ट्रस्ट ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

पर्यावरण संरक्षण के क्षेत्र में भी सोमनाथ एक आदर्श मॉडल बनकर उभरा है। वर्ष 2018 में इसे "स्वच्छ आइकॉनिक प्लेस" घोषित किया गया था। मंदिर में चढ़ाए जाने वाले फूलों से वर्मी कम्पोस्ट तैयार किया जाता है, जबकि प्लास्टिक कचरे से पावर ब्लॉक बनाए जाते हैं। हर महीने लगभग 30 लाख लीटर पानी का पुनर्चक्रण किया जाता है। परिसर में विकसित 7200 पेड़ों वाला मियावाकी जंगल हर वर्ष लगभग 93 हजार किलोग्राम कार्बन डाइऑक्साइड को अवशोषित करता है।

महिला सशक्तीकरण के क्षेत्र में भी सोमनाथ ट्रस्ट ने उल्लेखनीय पहल की है। ट्रस्ट के 906 कर्मचारियों में 262 महिलाएं कार्यरत हैं। बिल्व वन प्रबंधन, प्रसाद वितरण और भोजन सेवा सहित अनेक विभागों में महिलाएं महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही हैं। कुल 363 महिलाओं को सीधे रोजगार मिला है और उनकी वार्षिक आय लगभग 9 करोड़ रुपये बताई जाती है। "सोमनाथ स्वाभिमान पर्व" केवल एक धार्मिक आयोजन नहीं, बल्कि भारतीय सभ्यता के संघर्ष, पुनर्जागरण और आत्मविश्वास का प्रतीक बन चुका है। यह आयोजन एक ओर 1026 के आक्रमण की ऐतिहासिक स्मृति को याद करता है, तो दूसरी ओर 1951 में हुए पुनर्निर्माण के माध्यम से यह संदेश देता है कि भारत की सांस्कृतिक चेतना को कभी समाप्त नहीं किया जा सकता। आज भी सोमनाथ करोड़ों लोगों के लिए आस्था, स्वाभिमान और राष्ट्रीय गौरव का जीवंत प्रतीक बना हुआ है।

सूरत ने खोया जनसेवा और शिक्षा का समर्पित चेहरा डॉ. कनुभाई मावाणी के निधन से शोक की लहर

Surat। सूरत शहर के पूर्व मेयर, पूर्व विधायक और Saurashtra University के पूर्व कुलपति डॉ. कनुभाई मावाणी के निधन से शहर में गहरा शोक व्याप्त हो गया है। 81 वर्ष की आयु में उन्होंने अंतिम सांस ली। लंबे समय से किडनी संबंधी बीमारी से जूझ रहे डॉ. मावाणी डायलिसिस पर थे। शुक्रवार, 8 मई को उनके निधन की खबर सामने आते ही राजनीतिक, सामाजिक, शैक्षणिक और व्यावसायिक जगत में शोक की लहर दौड़ गई। सूरत शहर ने एक ऐसे व्यक्तित्व को खो दिया, जिसने राजनीति, शिक्षा और समाजसेवा के क्षेत्र में अपनी अलग पहचान बनाई थी।

डॉ. मावाणी का जीवन सार्वजनिक सेवा, सादगी और शिक्षा के प्रति समर्पण का उदाहरण माना जाता रहा। आयुर्वेदिक चिकित्सक और कॉलेज प्रिंसिपल के रूप में अपने करियर की शुरुआत करने वाले डॉ. मावाणी ने बाद में राजनीति और शिक्षा प्रशासन दोनों क्षेत्रों में उल्लेखनीय योगदान दिया। वे उन चुनिंदा नेताओं में गिने जाते थे, जिन्होंने सत्ता और पद को केवल सार्वजनिक हित का माध्यम माना।

9 मई की सुबह जब उनका अंतिम संस्कार किया गया, तब वातावरण अत्यंत भावुक हो उठा। सबसे अधिक मार्मिक दृश्य उस समय देखने को मिला, जब उनकी चारों बेटियों ने अपने पिता की अर्थी को कंधा देकर अंतिम विदाई दी। नम आंखों से बेटियों ने पिता को विदा करते हुए समाज के सामने एक मजबूत भावनात्मक संदेश भी दिया। वहां उपस्थित हजारों लोगों की आंखें उस दृश्य को देखकर भर आईं। लोगों ने कहा कि बेटियों ने जिस साहस और श्रद्धा के साथ अपने पिता को अंतिम

विदाई दी, वह समाज के लिए एक प्रेरणादायक क्षण बन गया।

अंतिम संस्कार में केंद्रीय मंत्री C. R. Patil, सूरत शहर भाजपा अध्यक्ष परेशभाई पटेल, पूर्व मेयर दक्षेश मावाणी, सामाजिक संगठनों के प्रतिनिधि, शिक्षाविद और अनेक उद्योगपति मौजूद रहे। हीरा उद्योग से जुड़े प्रमुख उद्योगपति दिनेश नवाडिया ने भी डॉ. मावाणी को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कहा कि सूरत ने एक दूरदर्शी और समाजहितैषी व्यक्तित्व खो दिया है। पूरे वातावरण में गहरी संवेदना और सम्मान का भाव दिखाई दे रहा था। डॉ. कनुभाई मावाणी ने अपने सार्वजनिक जीवन में कई महत्वपूर्ण जिम्मेदारियां निभाईं। वर्ष 1990 में विधायक के रूप में उन्होंने विधानसभा में सूरत और दक्षिण गुजरात से जुड़े मुद्दों को मजबूती से उठाया। लोगों का कहना है कि वे हमेशा आम नागरिकों की समस्याओं को प्राथमिकता देते थे और जनता से सीधा संवाद बनाए रखते थे।

इसके बाद 2005 से 2007 तक सूरत के मेयर के रूप में उन्होंने शहर के बुनियादी ढांचे और नागरिक सुविधाओं के विकास पर विशेष ध्यान दिया। उस समय सूरत तेजी से विकसित हो रहे शहरों में शामिल हो रहा था और डॉ. मावाणी ने शहरी विकास, सड़क निर्माण, सफाई व्यवस्था और सार्वजनिक सेवाओं को बेहतर बनाने के लिए कई योजनाओं को आगे बढ़ाया। नगर प्रशासन में उनकी कार्यशैली को पारदर्शी और जनहितकारी माना जाता था। शिक्षा क्षेत्र में भी उनका योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण रहा। Saurashtra University के कुलपति के रूप में 1999 से 2005 तक उन्होंने विश्वविद्यालय प्रशासन में पारदर्शिता, अनुशासन और छात्र हितों को प्राथमिकता देने वाले कई निर्णय लिए। उनके कार्यकाल को शिक्षा सुधार और प्रशासनिक मजबूती के दौर के रूप में याद किया जाता है। शिक्षकों और छात्रों के बीच उनकी छवि एक सरल, सुलभ और दूरदर्शी प्रशासक की रही।

वे श्री स्वामी आत्मानंद सरस्वती शिक्षण संस्थान के ट्रस्टी भी रहे और तापी डिप्लोमा इंजीनियरिंग कॉलेज जैसे प्रतिष्ठित संस्थानों से लंबे समय तक जुड़े रहे। वराछा और आसपास के क्षेत्रों में तकनीकी एवं उच्च शिक्षा के विस्तार में उनकी भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण मानी जाती है। उनके मार्गदर्शन में हजारों विद्यार्थियों ने तकनीकी शिक्षा प्राप्त कर अपने भविष्य को नई दिशा दी। शिक्षा के क्षेत्र में उनका प्रयास केवल संस्थान खड़े करना नहीं था, बल्कि युवाओं को आत्मनिर्भर बनाना उनका प्रमुख उद्देश्य था। सामाजिक कार्यों में भी उनकी सक्रिय भागीदारी रही। वे अनेक सामाजिक और धार्मिक गतिविधियों से जुड़े रहे तथा जरूरतमंदों की सहायता के लिए हमेशा आगे रहते थे। उनके करीबी लोगों का कहना है कि सार्वजनिक जीवन में इतने लंबे समय तक सक्रिय रहने के बावजूद उन्होंने सादगी कभी नहीं छोड़ी। यही कारण था कि राजनीति से लेकर शिक्षा जगत तक हर वर्ग में उनका सम्मान था।

डॉ. मावाणी के निधन के बाद सूरत नगर निगम ने भी श्रद्धांजलि स्वरूप महत्वपूर्ण निर्णय लिया। नगर निगम प्रशासन ने सोमवार को निगम कार्यालय और शिक्षा समिति के सभी स्कूल बंद रखने की घोषणा की है। हालांकि आवश्यक सेवाएं पूर्व की तरह जारी रहेंगी। यह निर्णय उनके प्रति सम्मान और शहर में उनके योगदान को देखते हुए लिया गया।

सूरत शहर में आज डॉ. कनुभाई मावाणी को केवल एक राजनेता या शिक्षाविद के रूप में नहीं, बल्कि एक ऐसे जनसेवक के रूप में याद किया जा रहा है, जिसने जीवनभर समाज और शिक्षा के लिए काम किया। राजनीति में सक्रिय रहते हुए भी उन्होंने शिक्षा और सामाजिक मूल्यों को हमेशा प्राथमिकता दी। उनके निधन से सूरत के सार्वजनिक जीवन में एक ऐसा खालीपन पैदा हुआ है, जिसे लंबे समय तक महसूस किया जाएगा।

तमिलनाडु में बदला सियासी इतिहास, 'थलापति' विजय के हाथों में सत्ता; 1967 के बाद पहली बार टूटा डीएमके-एआईएडीएमके का वर्चस्व

Tamil Nadu की राजनीति में एक ऐतिहासिक बदलाव का दौर शुरू हो चुका है। दशकों तक द्रविड़ राजनीति के दो प्रमुख स्तंभों — Dravida Munnetra Kazhagam और All India Anna Dravida Munnetra Kazhagam — के बीच घूमती रही सत्ता अब एक नए चेहरे और नई राजनीतिक धारा के हाथों में जाती दिखाई दे रही है। अभिनेता से राजनेता बने C. Joseph Vijay, जिन्हें उनके समर्थक "थलापति विजय" के नाम से जानते हैं, रविवार को तमिलनाडु के नए मुख्यमंत्री के रूप में शपथ लेने जा रहे हैं। यह केवल सत्ता परिवर्तन नहीं, बल्कि राज्य की राजनीति में एक युगांतकारी बदलाव माना जा रहा है।

टीवीके यानी Tamilaga Vettri Kazhagam के प्रमुख विजय ने शनिवार को चेन्नई स्थित लोक भवन में राज्यपाल Rajendra Vishwanath Arlekar से मुलाकात कर सरकार बनाने का दावा पेश किया। विजय ने 234 सदस्यीय विधानसभा में 121 विधायकों के समर्थन का पत्र राज्यपाल को सौंपा। इसके बाद राज्यपाल ने नई सरकार गठन की प्रक्रिया को मंजूरी दे दी और अब चेन्नई के जवाहरलाल नेहरू स्टेडियम में भव्य शपथ ग्रहण समारोह की तैयारियां तेज हो गई हैं।

राजनीतिक विश्लेषकों के अनुसार तमिलनाडु की राजनीति में यह परिवर्तन ऐतिहासिक इसलिए भी माना जा रहा है क्योंकि वर्ष 1967 के बाद पहली बार कोई ऐसा नेता मुख्यमंत्री बनने जा रहा है, जो डीएमके या एआईएडीएमके से नहीं जुड़ा है। पिछले लगभग छह दशकों से राज्य की राजनीति इन्हीं दो दलों के इर्द-गिर्द घूमती रही थी। ऐसे में विजय का सत्ता तक पहुंचना तमिलनाडु की जनता के बदलते राजनीतिक मूड और नई पीढ़ी की आकांक्षाओं का संकेत माना जा रहा है। शपथ ग्रहण समारोह रविवार सुबह 10 बजे आयोजित किया जाएगा। सूत्रों के अनुसार विजय के साथ उनकी नई कैबिनेट के नौ विधायक भी मंत्री पद की शपथ ले सकते हैं। चेन्नई में इस ऐतिहासिक क्षण को लेकर समर्थकों के बीच भारी उत्साह देखने को मिल रहा है। शहरभर में विजय के पोस्टर, बैनर और स्वागत संदेश लगाए गए हैं। टीवीके कार्यकर्ता इसे "नई राजनीति की शुरुआत" और "जनता की जीत" बता रहे हैं।

हालांकि मुख्यमंत्री पद तक पहुंचने का विजय का रास्ता आसान नहीं था। पिछले कई दिनों से तमिलनाडु की राजनीति अनिश्चितता और जोड़-तोड़ के दौर से गुजर रही थी। विधानसभा में बहुमत का जादुई आंकड़ा जुटाने के लिए विजय और उनकी टीम लगातार राजनीतिक दलों से बातचीत कर रही थी। पिछले चार दिनों में राज्यपाल के साथ उनकी यह चौथी महत्वपूर्ण मुलाकात थी। राजनीतिक हलकों में लगातार अटकलें लगाई जा रही थीं कि क्या टीवीके वास्तव में सरकार बना पाएगी या राज्य में राजनीतिक संकट और गहरा जाएगा।

स्थिति उस समय पूरी तरह बदल गई जब शनिवार, 9 मई 2026 को Viduthalai Chiruthaigal Katchi और Indian Union Muslim League ने टीवीके को बिना शर्त समर्थन देने की घोषणा कर दी। इसके साथ ही विजय के नेतृत्व वाले गठबंधन का आंकड़ा 121 तक पहुंच गया और सत्ता का रास्ता साफ हो गया।

टीवीके को समर्थन देने वाले दलों में Indian National Congress सबसे पहले सामने आई। कांग्रेस के पांच विधायकों ने विजय को समर्थन देकर स्पष्ट संकेत दिया कि पार्टी तमिलनाडु में नई राजनीतिक धारा के साथ खड़ी होना चाहती है। इसके बाद Communist Party of India और Communist Party of India (Marxist) ने भी "स्थिर और लोकतांत्रिक शासन" के नाम पर समर्थन पत्र सौंप दिए। दोनों दलों के कुल चार विधायक हैं।

सबसे अहम समर्थन वीसीके प्रमुख Thol. Thirumavalavan की पार्टी की ओर से आया। लंबे समय तक सस्पेंस बनाए रखने के बाद वीसीके ने शनिवार को समर्थन की औपचारिक घोषणा कर दी। इसके तुरंत बाद आईयूएमएल के दो विधायकों ने भी विजय सरकार के समर्थन का ऐलान किया। इन समर्थन पत्रों ने तमिलनाडु की राजनीति की तस्वीर पूरी तरह बदल दी।

राजनीतिक विशेषज्ञों का मानना है कि विजय की लोकप्रियता ने इस चुनावी समीकरण में निर्णायक भूमिका निभाई। फिल्मी दुनिया में वर्षों तक सुपरस्टार रहे विजय ने राजनीति में प्रवेश के बाद खुद को केवल सेलिब्रिटी नेता के रूप में प्रस्तुत नहीं किया, बल्कि युवाओं, मध्यम वर्ग और नए मतदाताओं के बीच मजबूत राजनीतिक पहचान बनाने की कोशिश की। उनकी सभाओं में उमड़ने वाली भीड़ और सोशल मीडिया पर व्यापक समर्थन ने पारंपरिक दलों को भी चुनौती दी।

विशेषज्ञ यह भी मानते हैं कि तमिलनाडु की जनता लंबे समय से पारंपरिक द्रविड़ राजनीति से अलग एक नए विकल्प की तलाश में थी। डीएमके और एआईएडीएमके के बीच लगातार बदलती सत्ता, आंतरिक संघर्ष और नेतृत्व संकट ने जनता के एक वर्ग को नए राजनीतिक चेहरे की ओर आकर्षित किया। विजय ने इसी राजनीतिक शून्य को भरने की कोशिश की और युवाओं के बीच "परिवर्तन" की राजनीति का संदेश दिया। टीवीके समर्थकों के अनुसार विजय केवल अभिनेता नहीं, बल्कि सामाजिक मुद्दों पर मुखर नेता के रूप में उभरे हैं। उन्होंने शिक्षा, रोजगार, भ्रष्टाचार और क्षेत्रीय पहचान जैसे मुद्दों को प्रमुखता से उठाया। उनकी छवि एक ऐसे नेता की बनाई गई, जो पारंपरिक राजनीतिक परिवारों से अलग है और सीधे जनता से संवाद करता है।

अब सबसे बड़ा सवाल यह है कि विजय की सरकार राज्य की अपेक्षाओं पर कितना खरा उतर पाएगी। राजनीतिक विश्लेषकों का कहना है कि जनता ने उन्हें परिवर्तन के प्रतीक के रूप में चुना है, लेकिन शासन चलाना और राजनीतिक संतुलन बनाए रखना उनके लिए बड़ी चुनौती होगी। गठबंधन की राजनीति, विभिन्न दलों की अपेक्षाएं और प्रशासनिक अनुभव की कमी जैसे मुद्दे उनके सामने महत्वपूर्ण परीक्षा बन सकते हैं।

इसके बावजूद तमिलनाडु में फिलहाल उत्सव जैसा माहौल है। विजय समर्थक इसे "नई सुबह" और "जनता की जीत" बता रहे हैं। चेन्नई से लेकर मदुरै और कोयंबटूर तक टीवीके कार्यकर्ताओं ने जश्न मनाना शुरू कर दिया है। सोशल मीडिया पर "थलापति सीएम" ट्रेंड कर रहा है और युवा वर्ग इस बदलाव को ऐतिहासिक क्षण के रूप में देख रहा है।

तमिलनाडु की राजनीति में यह परिवर्तन केवल एक सरकार का गठन नहीं, बल्कि राज्य के राजनीतिक इतिहास का नया अध्याय माना जा रहा है। 1967 के बाद पहली बार सत्ता द्रविड़ राजनीति के पारंपरिक ढांचे से बाहर निकलकर एक नए राजनीतिक प्रयोग के हाथों में जा रही है। अब पूरे देश की नजर इस बात पर टिकी है कि क्या विजय अपनी लोकप्रियता को प्रभावी शासन में बदल पाएंगे और क्या टीवीके वास्तव में तमिलनाडु की राजनीति में स्थायी ताकत बनकर उभरेगी।

वेल्थ एक्सपो 2026 में गूंजा नया संदेश: मजबूत राष्ट्र, सही सोच और जीवन मूल्य ही असली समृद्धि का आधार

Surat। तेजी से बदलती वैश्विक अर्थव्यवस्था, निवेश के नए अवसरों और बढ़ते भू-राजनीतिक तनावों के बीच सूरत में आयोजित वेल्थ एक्सपो 2026 केवल निवेश और व्यापार का मंच बनकर नहीं उभरा, बल्कि यह जीवन मूल्यों, राष्ट्रीय सुरक्षा और दीर्घकालिक समृद्धि पर गंभीर मंथन का केंद्र भी बना। तीन दिवसीय इस आयोजन के पहले दिन देश के जाने-माने उद्योगपतियों, आर्थिक विशेषज्ञों और निवेश सलाहकारों ने स्पष्ट संदेश दिया कि भविष्य की सबसे बड़ी पूंजी केवल पैसा नहीं, बल्कि सुरक्षित राष्ट्र, सही सोच, ज्ञान और जीवन मूल्यों में छिपी है। Southern Gujarat Chamber of Commerce and Industry और JITO Surat द्वारा आयोजित इस एक्सपो में बड़ी संख्या में उद्योगपति, निवेशक, स्टार्टअप उद्यमी और युवा व्यवसायी शामिल हुए। आयोजन में वैश्विक अर्थव्यवस्था से लेकर व्यक्तिगत विकास तक अनेक विषयों पर चर्चा हुई, लेकिन सबसे अधिक ध्यान उन विचारों ने खींचा जिनमें आर्थिक शक्ति को राष्ट्रीय सुरक्षा और मानवीय मूल्यों से जोड़ा गया।

जियो-पॉलिटिकल एक्सपर्ट और Axis Mutual Fund के पूर्व सीबीओ Karan Datta ने अपने संबोधन में कहा कि दुनिया इस समय एक बड़े आर्थिक और रणनीतिक परिवर्तन के दौर से गुजर रही है। उन्होंने कहा कि सेमीकंडक्टर चिप्स और 'रेयर अर्थ' मेटल्स को लेकर वैश्विक प्रतिस्पर्धा तेजी से बढ़ रही है और आने वाले वर्षों में यही संसाधन विश्व अर्थव्यवस्था और तकनीकी शक्ति का आधार बनेंगे।

करण दत्ता ने कहा कि आज की दुनिया में केवल आर्थिक ताकत पर्याप्त नहीं है, बल्कि किसी भी देश की असली मजबूती उसकी सुरक्षा व्यवस्था और रणनीतिक स्थिरता से तय होती है। उन्होंने कहा कि शेयर बाजार और निवेशकों का भरोसा भी उसी देश पर अधिक रहता है, जो राजनीतिक रूप से स्थिर और सुरक्षा की दृष्टि से मजबूत हो। उनके अनुसार वैश्विक निवेश अब केवल मुनाफे को देखकर नहीं, बल्कि रणनीतिक स्थिरता और राष्ट्रीय सुरक्षा को ध्यान में रखकर किया जा रहा है।

उन्होंने तीसरे विश्व युद्ध की आशंकाओं पर भी अपनी राय रखते हुए कहा कि दुनिया भय और संघर्ष से आगे बढ़कर अब अधिक संतुलित और शांतिपूर्ण दौर

की ओर बढ़ रही है। करण दत्ता ने कहा, "लोग लगातार तीसरे विश्व युद्ध की बात करते हैं, लेकिन मुझे लगता है कि आने वाली पीढ़ी आतंकवाद को केवल इतिहास की किताबों में पढ़ेगी।" उन्होंने भारत और Israel द्वारा आतंकवाद के खिलाफ उठाए गए कदमों का उल्लेख करते हुए कहा कि स्टेट-स्पॉन्सर्ड टेररिज्म का दौर धीरे-धीरे समाप्ति की ओर बढ़ रहा है।

उन्होंने यह भी कहा कि वैश्विक अर्थव्यवस्था अब तेजी से ग्लोबलाइजेशन से लोकलाइजेशन की ओर बढ़ रही है। पहले जहां दुनिया पूरी तरह वैश्विक सप्लाई चेन पर निर्भर थी, वहीं अब देश अपनी घरेलू उत्पादन क्षमता और स्थानीय उद्योगों को मजबूत करने पर जोर दे रहे हैं। उनका मानना है कि भारत इस बदलाव से सबसे अधिक लाभ उठा सकता है, क्योंकि यहां विशाल उपभोक्ता बाजार, युवा आबादी और मजबूत उद्यमशीलता मौजूद है।

करण दत्ता ने निवेशकों को सलाह दी कि वे केवल तात्कालिक लाभ के आधार पर निवेश न करें, बल्कि दीर्घकालिक दृष्टि के साथ संतुलित पोर्टफोलियो तैयार करें। उन्होंने कहा कि अगले पांच वर्षों में तकनीक, रक्षा, ऊर्जा, डिजिटल सेवाएं और घरेलू विनिर्माण जैसे क्षेत्रों में बड़े अवसर उभर सकते हैं। कार्यक्रम में उनका परिचय कैपिटल कमेटी एडवाइजर केतन दलाल ने कराया।

इस अवसर पर प्रसिद्ध उद्योगपति और पद्मश्री सम्मानित Savji Dholakia ने जीवन मूल्यों और आत्मविकास पर बेहद प्रेरणादायक विचार रखे। उन्होंने कहा कि आज लोग धन कमाने की दौड़ में जीवन के वास्तविक मूल्यों को भूलते जा रहे हैं। उनके अनुसार केवल पैसा कमाना ही सफलता नहीं है, बल्कि व्यक्ति को अपनी समझ, व्यक्तित्व, स्वास्थ्य और समय में भी निवेश करना चाहिए।

सावजीभाई ढोलकिया ने कहा, "यदि हम अपनी खूबियों और व्यक्तित्व के विकास में निवेश नहीं करेंगे, तो अंत में पछताना पड़ेगा। पैसा और प्रसिद्धि केवल परिणाम हैं, असली निवेश ज्ञान और समझ में होता है।" उनके इस वक्तव्य को उपस्थित लोगों ने जोरदार तालियों के साथ सराहा।

उन्होंने युवाओं को सकारात्मक सोच और संतुलित जीवनशैली अपनाने का संदेश देते हुए कहा कि जीवन केवल व्यवसाय और मुनाफे तक सीमित नहीं होना चाहिए। व्यक्ति को अपने परिवार, समाज और स्वयं के मानसिक विकास के लिए भी समय देना चाहिए। उन्होंने कहा कि मुस्कान, संतोष और सकारात्मकता ऐसी संपत्ति हैं जिन्हें कोई आर्थिक संकट भी नहीं छीन सकता।

सावजीभाई ढोलकिया ने यह भी कहा कि आज के समय में लोग भौतिक उपलब्धियों को सफलता का मापदंड मानते हैं, जबकि वास्तविक सफलता आत्मसंतोष और समाज के प्रति योगदान में छिपी होती है। उन्होंने युवाओं से आग्रह किया कि वे केवल करियर बनाने पर ध्यान न दें, बल्कि अपने भीतर अच्छे इंसान का निर्माण भी करें।

वेल्थ एक्सपो 2026 में मौजूद उद्योगपतियों और निवेशकों ने भी माना कि बदलती वैश्विक परिस्थितियों में निवेश की परिभाषा तेजी से बदल रही है। अब केवल शेयर बाजार या संपत्ति में निवेश ही पर्याप्त नहीं माना जा रहा, बल्कि ज्ञान, कौशल, स्वास्थ्य और सामाजिक विश्वसनीयता को भी दीर्घकालिक संपत्ति के रूप में देखा जा रहा है।

कार्यक्रम के दौरान तकनीक, स्टार्टअप, वित्तीय प्रबंधन, डिजिटल निवेश और वैश्विक आर्थिक चुनौतियों पर भी चर्चा हुई। विशेषज्ञों ने कहा कि भारत अगले दशक में दुनिया की सबसे तेजी से बढ़ती अर्थव्यवस्थाओं में शामिल रहेगा और ऐसे समय में भारतीय उद्योगपतियों तथा निवेशकों के लिए अनेक अवसर पैदा होंगे।

सूरत, जो पहले ही टेक्सटाइल और डायमंड उद्योग के लिए विश्वभर में पहचान रखता है, अब निवेश और उद्यमशीलता के नए केंद्र के रूप में भी उभर रहा है। वेल्थ एक्सपो जैसे आयोजनों को इसी बदलाव का संकेत माना जा रहा है, जहां व्यापारिक चर्चा केवल मुनाफे तक सीमित नहीं रही, बल्कि राष्ट्र निर्माण, सामाजिक मूल्यों और भविष्य की पीढ़ियों के विकास तक पहुंच गई। आयोजन में शामिल लोगों का मानना था कि आज की दुनिया में सबसे बड़ा निवेश केवल आर्थिक पूंजी नहीं, बल्कि भरोसा, स्थिरता, ज्ञान और सकारात्मक दृष्टिकोण है। यही संदेश वेल्थ एक्सपो 2026 के पहले दिन पूरे आयोजन का सबसे महत्वपूर्ण निष्कर्ष बनकर सामने आया।

पश्चिम बंगाल में राजनीतिक भूचाल, सत्ता का ऐतिहासिक पलटवार; भाजपा ने पहली बार बनाया मुख्यमंत्री, ‘सोनार बांग्ला’ की नई शुरुआत का दावा

West Bengal की राजनीति में एक ऐसा घटनाक्रम सामने आया है, जिसने पूरे देश के राजनीतिक परिदृश्य को हिला कर रख दिया है। दशकों से कांग्रेस, वाम मोर्चा और फिर All India Trinamool Congress के प्रभाव में रही इस राज्य की सत्ता अब पहली बार Bharatiya Janata Party के हाथों में चली गई है। इस ऐतिहासिक बदलाव के केंद्र में हैं Suvendu Adhikari, जिन्होंने राज्य के नए मुख्यमंत्री के रूप में शपथ लेकर बंगाल की राजनीति में एक नए अध्याय की शुरुआत कर दी है।

कोलकाता में आयोजित भव्य शपथ ग्रहण समारोह में सुवेंदु अधिकारी ने बांग्ला में ईश्वर के नाम की शपथ ली। यह क्षण न केवल राजनीतिक दृष्टि से, बल्कि प्रतीकात्मक रूप से भी अत्यंत महत्वपूर्ण माना जा रहा है। शपथ ग्रहण के बाद उन्होंने प्रधानमंत्री को झुककर प्रणाम किया, जिससे मंच पर मौजूद नेताओं और समर्थकों में उत्साह की लहर दौड़ गई। पूरे कार्यक्रम को “सोनार बांग्ला” के नए युग की शुरुआत के रूप में प्रस्तुत किया गया।

समारोह में केंद्र सरकार के कई शीर्ष नेता मौजूद रहे, जिनमें प्रधानमंत्री Narendra Modi, गृहमंत्री Amit Shah, रक्षा मंत्री Rajnath Singh और सड़क परिवहन मंत्री Nitin Gadkari सहित अनेक वरिष्ठ नेता शामिल थे। इसके अलावा एनडीए शासित राज्यों के लगभग 20 मुख्यमंत्री भी इस ऐतिहासिक अवसर पर मौजूद रहे, जिससे यह कार्यक्रम राष्ट्रीय स्तर का राजनीतिक शक्ति प्रदर्शन बन गया।

शपथ ग्रहण के दौरान सुवेंदु अधिकारी के साथ पांच विधायकों ने मंत्री पद की शपथ ली।

इनमें Dilip Ghosh, Agamitra Paul, Ashok Keerthania, Khudiram Tudu और Nisith Pramanik शामिल हैं। इन सभी को नई सरकार की रीढ़ माना जा रहा है और प्रशासनिक जिम्मेदारियों का बड़ा हिस्सा इनके कंधों पर रहेगा।

राजनीतिक विश्लेषकों का मानना है कि यह परिवर्तन केवल सत्ता परिवर्तन नहीं, बल्कि बंगाल की राजनीति में वैचारिक और संगठनात्मक पुनर्संरचना का संकेत है। लंबे समय से जिस राज्य को तृणमूल कांग्रेस का गढ़ माना जाता था, वहां भाजपा का यह उदय एक बड़े जनादेश और राजनीतिक बदलाव का संकेत माना जा रहा है।

कार्यक्रम की शुरुआत प्रधानमंत्री के रोड शो से हुई, जिसमें हजारों लोगों की भीड़ सड़कों पर उमड़ पड़ी। मंच पर पहुंचकर प्रधानमंत्री ने रवींद्रनाथ टैगोर की जयंती पर उन्हें श्रद्धांजलि दी और बंगाल की सांस्कृतिक विरासत को नमन किया। इसके बाद उन्होंने भाजपा के वरिष्ठ और 98 वर्षीय कार्यकर्ता माखनलाल सरकार से मुलाकात की, उन्हें शॉल ओढ़ाया और उनके चरण स्पर्श कर आशीर्वाद लिया। यह दृश्य पूरे समारोह का सबसे भावुक क्षण माना गया।

शपथ ग्रहण पूरा होने के बाद प्रधानमंत्री मोदी ने मंच से घुटनों के बल झुककर बंगाल की जनता को प्रणाम किया, जिसे राजनीतिक संदेश के रूप में भी देखा जा रहा है। इस प्रतीकात्मक gesture ने जनता और कार्यकर्ताओं के बीच गहरा प्रभाव छोड़ा।

भाजपा नेताओं ने इस ऐतिहासिक जीत को “सोनार बांग्ला” के नए युग की शुरुआत बताया है। पार्टी का दावा है कि अब राज्य में विकास, पारदर्शिता और स्थिर शासन का नया दौर शुरू होगा। समर्थकों के अनुसार यह बदलाव केवल राजनीतिक नहीं, बल्कि सामाजिक और आर्थिक पुनर्जागरण का भी संकेत है।

पश्चिम बंगाल में भाजपा की यह सफलता इसलिए भी महत्वपूर्ण मानी जा रही है क्योंकि आजादी के बाद से यहां कभी भी इस पार्टी ने पूर्ण बहुमत की सरकार नहीं बनाई थी। लंबे समय तक यह राज्य वामपंथी शासन और फिर तृणमूल कांग्रेस के प्रभाव में रहा। भाजपा का यह उदय राज्य की राजनीतिक संरचना में सबसे बड़ा बदलाव माना जा रहा है।

मुख्यमंत्री बने सुवेंदु अधिकारी का राजनीतिक सफर संघर्ष और बदलावों से भरा रहा है। उन्होंने 1995 में कोंताई नगरपालिका से पार्षद के रूप में अपने राजनीतिक जीवन की शुरुआत की थी। बाद में वे Trinamool Congress से जुड़कर पूर्वी मिदनापुर क्षेत्र में मजबूत जनाधार बनाने में सफल रहे। विधायक, सांसद और मंत्री के रूप में कार्य करते हुए वे राज्य की राजनीति में एक प्रभावशाली चेहरा बने।

नंदीग्राम आंदोलन के दौरान उनकी भूमिका ने उन्हें राज्य स्तर पर पहचान दिलाई। 2020 में भाजपा में शामिल होने के बाद उनका राजनीतिक कद तेजी से बढ़ा और वे विपक्ष के सबसे मजबूत चेहरों में से एक बन गए। अब मुख्यमंत्री के रूप में उनका उदय उनकी राजनीतिक यात्रा का सबसे बड़ा मोड़ माना जा रहा है।

राजनीतिक विशेषज्ञों का कहना है कि अब सबसे बड़ी चुनौती नई सरकार के सामने प्रशासनिक स्थिरता, रोजगार सृजन, निवेश आकर्षण और कानून-व्यवस्था को मजबूत करना होगी। साथ ही यह भी देखना होगा कि भाजपा अपने चुनावी वादों को किस हद तक जमीन पर उतार पाती है।

फिलहाल पूरे पश्चिम बंगाल में राजनीतिक उत्साह और बदलाव की लहर दिखाई दे रही है। समर्थक इसे “सोनार बांग्ला के पुनर्जागरण” के रूप में देख रहे हैं, जबकि विपक्ष इसे राजनीतिक पुनर्संयोजन का परिणाम बता रहा है। लेकिन इतना तय है कि यह परिवर्तन राज्य की राजनीति में एक नए युग की शुरुआत के रूप में दर्ज हो चुका है।

गुजरात बन रहा है ‘सिलिकॉन स्टेट’

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी की केंद्रीय कैबिनेट ने गुजरात को दी दो नए सेमीकंडक्टर प्रोजेक्ट्स की मंजूरी

- **धोलेरा में क्रिस्टल मैट्रिक्स द्वारा 3,068 करोड़ रुपए और सूरत में सुची सेमीकॉन द्वारा 868 करोड़ रुपए सहित कुल 3,936 करोड़ रुपए का निवेश किया जाएगा**
- **सेमीकंडक्टर क्षेत्र में गुजरात की ‘डबल इंजन’ रफ्तार : देश के 12 सेमीकंडक्टर प्रोजेक्ट्स में से 6 प्रोजेक्ट्स गुजरात में : विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मंत्री श्री अर्जुनभाई मोढवाडिया**
- **धोलेरा, साणंद और अब सूरत भी ग्लोबल चिप मैन्युफैक्चरिंग मैप पर चमकेंगे : क्रिस्टल मैट्रिक्स और सुची सेमीकॉन स्थापित करेंगे प्लांट**
- **देश की पहली ‘मिनी/माइक्रो एलईडी’ डिस्प्ले फैब्रिकेशन सुविधा भी अब गुजरात में**
- **2,230 से अधिक हाई-टेक रोजगार के अवसरों के साथ युवाओं के सपनों को मिलेगी नई उड़ान**

गांधीनगर : विज्ञान और प्रौद्योगिकी मंत्री श्री अर्जुनभाई मोढवाडिया ने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के कुशल नेतृत्व में केंद्र सरकार के ‘इंडिया सेमीकंडक्टर मिशन’ अंतर्गत गुजरात आज देश में चिप मैन्युफैक्चरिंग का केंद्र बन रहा है। हाल ही में हुई केंद्रीय कैबिनेट बैठक में इंडिया सेमीकंडक्टर मिशन (आईएसएम) के तहत गुजरात के लिए और दो 3,936 करोड़ रुपए के नए अत्याधुनिक सेमीकंडक्टर प्रोजेक्ट्स को मंजूरी देकर राज्य को सेमीकंडक्टर इकोसिस्टम का अभिन्न अंग और ‘सिलिकॉन स्टेट’ बनाने की दिशा में बड़ा प्रोत्साहन प्रदान किया गया है। इन दोनों प्रोजेक्ट्स में धोलेरा एसआईआर में क्रिस्टल मैट्रिक्स लिमिटेड द्वारा 3,068 करोड़ रुपए और सूरत में सुची सेमीकॉन प्राइवेट लिमिटेड (एसएसपीएल) द्वारा 868 करोड़ रुपए का निवेश किया जाएगा, जो राज्य के औद्योगिक विकास में एक नया मील का पत्थर साबित होगा।

मंत्री श्री मोढवाडिया ने आगे कहा कि मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल और उप मुख्यमंत्री श्री हर्ष संघवी के नेतृत्व में गुजरात ने सेमीकंडक्टर क्षेत्र के लिए समर्पित नीति घोषित की है, जिसके परिणामस्वरूप राज्य में लगभग 1.24 लाख करोड़ रुपए के चार बड़े प्रोजेक्ट्स आकार ले रहे हैं। इसके अलावा दो और सेमीकंडक्टर प्रोजेक्ट्स गुजरात में निर्मित होंगे। इस इकोसिस्टम को गति देने के लिए ‘गुजरात स्टेट इलेक्ट्रॉनिक्स मिशन’ (जीएसईएम) सिंगल विंडो फैसिलिटेटर के रूप में कार्य कर रहा है, जो निवेशकों के लिए प्रशासनिक प्रक्रियाओं को और सरल बना रहा है।

भारत सरकार द्वारा दी गई इस मंजूरी का स्वागत करते हुए श्री मोढवाडिया ने कहा कि गुजरात ने देश की पहली सेमीकंडक्टर पॉलिसी घोषित करके इस क्षेत्र में अनोखी पहल की थी। जिसके परिणामस्वरूप भारत में इंडिया सेमीकंडक्टर मिशन के तहत मंजूर कुल 12 सेमीकंडक्टर प्रोजेक्ट्स में से 6 प्रोजेक्ट्स गुजरात को मिले हैं और राज्य में इस क्षेत्र में सबसे अधिक कार्य हो रहा है। इन नए 2 प्रोजेक्ट्स से केवल 3,936 करोड़ रुपए का निवेश ही नहीं होगा, बल्कि 2,230 से अधिक युवाओं को उच्च टेक्निकल रोजगार मिलेगा और हजारों अप्रत्यक्ष रोजगार के अवसर भी उत्पन्न होंगे।

श्री मोढवाडिया ने जोड़ा कि भारत सरकार के इस निर्णय से गुजरात में चिप डिजाइनिंग से लेकर फैब्रिकेशन और पैकेजिंग तक की पूरी वैल्यू चेन मजबूत हुई है। गुजरात स्टेट इलेक्ट्रॉनिक्स मिशन (GSEM) इन दोनों कंपनियों को भूमि, पानी, बिजली और अन्य आधारभूत सुविधाओं में पूर्ण सहयोग देकर प्रोजेक्ट्स को समय पर कार्यरत करने के लिए कटिबद्ध है।

केंद्रीय कैबिनेट द्वारा गुजरात में मंजूर किए गए इन दो सेमीकंडक्टर प्रोजेक्ट्स के बारे में विस्तृत जानकारी देते हुए मंत्री श्री अर्जुनभाई मोढवाडिया ने कहा कि धोलेरा स्पेशल इन्वेस्टमेंट रीजन अब विश्व के अत्याधुनिक चिप मैन्युफैक्चरिंग केंद्रों की कतार में शामिल हो गया है। क्रिस्टल मैट्रिक्स लिमिटेड द्वारा धोलेरा एसआईआर में 3,068 करोड़ रुपए के निवेश के साथ देश की पहली कंपाउंड सेमीकंडक्टर फैब्रिकेशन सुविधा स्थापित की जाएगी। इस प्लांट की विशेषता के बारे में मंत्री ने आगे कहा कि क्रिस्टल मैट्रिक्स द्वारा स्थापित की जाने वाली सुविधा में गैलियम नाइट्राइड (जीएएन) टेक्नोलॉजी पर आधारित मिनी/माइक्रो-एलईडी डिस्प्ले बनाए जाएंगे। जिन्हें अब तक केवल आयात किया जाता था। यह सुविधा प्रतिवर्ष 72,000 वर्ग मीटर डिस्प्ले पैनल्स और 24,000 सेट आरजीबी वेफर्स का निर्माण करेगी। धोलेरा में बनने वाले इन मिनी/माइक्रो-एलईडी डिस्प्ले के उपयोग से स्मार्टफोन, इलेक्ट्रिक वाहनों के डैशबोर्ड और हाई-एंड टीवी स्क्रीन भविष्य में ‘मेड इन गुजरात’ चिप्स से सज्ज होंगे।

श्री मोढवाडिया ने जोड़ा कि इसके अलावा हीरा और टेक्सटाइल उद्योग के लिए प्रसिद्ध सूरत शहर अब हाई-टेक सेमीकंडक्टर चिप्स का उत्पादन भी करेगा। सुची सेमीकॉन प्राइवेट लिमिटेड (एसएसपीएल) द्वारा 868 करोड़ रुपए की लागत से सूरत में सेमीकंडक्टर असेंबली एंड टेस्ट (ओएसएटी) सुविधा स्थापित की जाएगी। जिसमें प्रतिवर्ष 103.03 करोड़ रुपए से अधिक चिप्स का उत्पादन होगा। ये चिप्स ऑटोमोबाइल और इंडस्ट्रियल ऑटोमेशन क्षेत्र की मांग को पूरा करने में सहायक होंगे।

पंजाब में पत्रकारों ने प्रेस की स्वतंत्रता के मुद्दे पर जमकर विरोध प्रदर्शन किया, सोशल मीडिया पेज ब्लॉक के खिलाफ भी प्रदर्शन किया

(छगनलाल मेवाड़ा द्वारा) सूरत।

आज देशभर में पत्रकारों को सच लिखने की भारी कीमत चुकानी पड़ रही है, और इसके कई उदाहरण मौजूद हैं। ऐसे उदाहरण भी हैं जहां सच का साथ देने वाले पत्रकारों को मौत तक की सजा भुगतनी पड़ी है। मंगलवार को पंजाब के बठिंडा शहर में बड़ी संख्या में पत्रकार, किसान प्रतिनिधि और नागरिक अधिकार कार्यकर्ता वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक (एसएसपी) के कार्यालय के बाहर जमा हुए और उन्होंने जोरदार विरोध प्रदर्शन किया। “प्रेस दी आजादी बहाल करो संघर्ष समिति” द्वारा आयोजित इस प्रदर्शन में शामिल लोगों ने मानव श्रृंखला बनाकर राज्य में प्रेस की आजादी पर हो रहे हमलों के खिलाफ अपना गुस्सा जाहिर किया।

प्रदर्शनकारियों ने केंद्र और राज्य सरकारों के खिलाफ नारे लगाए और आरोप लगाया कि स्वतंत्र पत्रकारिता को अधिकारियों द्वारा सुनियोजित रूप से निशाना बनाया जा रहा है। इस विवाद के केंद्र में पत्रकार मनिंदरजीत सिंह सिद्धू के सोशल मीडिया पेज को बंद करने की घटना है। आरोप है कि सिद्धू द्वारा बठिंडा के जियोंद गांव में विवादास्पद मुद्दों पर रिपोर्टिंग करने के बाद पुलिस ने यह कार्रवाई की। अंत में, सभा ने चेतावनी दी कि पत्रकारों को डराना और उनके काम में दखल देना अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के संवैधानिक अधिकार का सीधा उल्लंघन है।

समिति ने स्पष्ट धमकी दी है कि यदि अवरुद्ध पृष्ठों को बहाल नहीं किया गया और पत्रकारों के खिलाफ “झूठे मामले” वापस नहीं लिए गए, तो आने वाले दिनों में राज्य भर में आंदोलन तेज किया जाएगा।

वडोदरा में गणेश प्रतिमा पर अंडा फेंकने के मामले में पुलिस की कार्रवाई के खिलाफ उच्च न्यायालय में याचिका दायर की गई है

(छगनलाल मेवाड़ा द्वारा) सूरत।

पुलिस ने 2025 में वडोदरा में गणेश उत्सव के अवसर पर श्री गणेशजी की प्रतिमा पर अंडे फेंककर शांति भंग करने के आरोपी को गिरफ्तार किया। यह भी पता चला कि गिरफ्तार आरोपियों में से एक नाबालिग था।

पुलिस ने आरोपियों का सार्वजनिक जुलूस निकालकर जनता की भावनाओं को ठेस पहुंचाने के लिए माफी भी मांगी। पिछले साल अगस्त में पानीगेट के पास श्रीजी की प्रतिमा पर अंडे फेंकने की घटना को लेकर वडोदरा में विवाद खड़ा हो गया है। इस पूरे मामले में पुलिस पर अदालत की अवमानना का आरोप भी लगा है। क्राइम ब्रांच और सिटी पीआई समेत छह अधिकारियों के खिलाफ याचिका दायर की गई है।

हाई कोर्ट ने पांच आरोपियों की याचिका स्वीकार कर ली है। हाई कोर्ट ने कहा है कि पुनर्निर्माण के नाम पर जुलूस नहीं निकाला जा सकता। सुप्रीम कोर्ट के निर्देशों का उल्लंघन करते हुए आरोपियों का जुलूस निकालने के मुद्दे पर हाई कोर्ट ने जवाब मांगा है। यह घटना पिछले साल अगस्त में पानीगेट के पास हुई थी। जिसके कारण तनावपूर्ण स्थिति उत्पन्न हो गई थी। घटना को गंभीरता से लेते हुए पुलिस तुरंत मौके पर पहुंची। पुलिस ने शहर के पुलिस स्टेशन में एफआईआर दर्ज कर मामले की कार्यवाही शुरू कर दी है।

11 मई 2026 से ओखा और तिरुपति के बीच नई साप्ताहिक ट्रेन की शुरुआत

यात्रियों की मांग एवं सुविधा को ध्यान में रखते हुए 11 मई 2026 से पश्चिम रेलवे द्वारा ओखा और तिरुपति के बीच नई साप्ताहिक ट्रेन की शुरुआत की जा रही है। इस ट्रेन का विवरण इस प्रकार हैः

ट्रेन संख्या 19560/19559 ओखा-तिरुपति एक्सप्रेस (साप्ताहिक)

ट्रेन संख्या 19560 ओखा-तिरुपति एक्सप्रेस (साप्ताहिक) 11 मई, 2026 से ओखा से प्रत्येक सोमवार को 23.35 बजे प्रस्थान करेगी, मंगलवार को प्रातः 08.00 बजे अहमदाबाद पहुंचेगी और बुधवार को 23.30 बजे तिरुपति पहुंचेगी।

इसी तरह ट्रेन संख्या 19559 तिरुपति-ओखा एक्सप्रेस (साप्ताहिक) 14 मई, 2026 से तिरुपति से प्रत्येक गुरुवार को सुबह 08.15 बजे प्रस्थान करके शनिवार को 01.10 बजे अहमदाबाद पहुंचेगी तथा 11.50 बजे ओखा पहुंचेगी।

स्टॉपेज :

यह ट्रेन दोनों दिशाओं में द्वारका, खंभालिया, जामनगर, हापा, राजकोट, वांकानेर, सुरेन्द्रनगर, विरमगाम, अहमदाबाद, आणंद, वडोदरा, भरूच, सूरत, उधना, नंदूरबार, आमलनेर, जलगांव, भुसावल, मलकापुर, अकोला, वाशिम, हिंगोली डेक्कन, बसमत, पूर्णा, हजूर साहिब नांदेड़, बासर, निजामाबाद, कामारेड्डी, बोलारम, काचीगुडा, महबूबनगर, गदवाल, कर्नूलु सिटी, डोन, ताडिपत्रि, कड़पा, राजमपेटा, रेनीगुंटा तथा तिरुपति स्टेशनों पर रुकेगी।

इस ट्रेन में सेकंड एसी, थर्ड एसी, स्लीपर क्लास तथा जनरल कोच रहेंगे

ट्रेन संख्या 19560 ओखा-तिरुपति एक्सप्रेस की बुकिंग 10 मई, 2026 से पीआरएस काउंटर तथा IRCTC की वेबसाइट पर प्रारंभ होगी। ट्रेनों के ठहराव, संरचना एवं समय संबंधी विस्तृत जानकारी के लिए यात्री कृपया www.enquiry.indianrail.gov.in पर जाकर अवलोकन कर सकते हैं।

जनसुरक्षा योजनाओं के 11 वर्ष: करोड़ों परिवारों को मिला आर्थिक सुरक्षा कवच, 25,160 करोड़ के दावों का निपटान

नई दिल्ली। केंद्र सरकार की जनसुरक्षा योजनाओं ने पिछले 11 वर्षों में देश के करोड़ों परिवारों को आर्थिक सुरक्षा प्रदान करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। कम प्रीमियम में बीमा और पेंशन जैसी सुविधाएं उपलब्ध कराने वाली इन योजनाओं ने विशेष रूप से गरीब, निम्न आय वर्ग और असंगठित क्षेत्र से जुड़े लोगों के लिए एक मजबूत सामाजिक सुरक्षा तंत्र तैयार किया है। केंद्रीय वित्त मंत्री Nirmala Sitharaman ने शनिवार को बताया कि वर्ष 2015 में शुरू की गई प्रमुख जनसुरक्षा योजनाओं के तहत अब तक 25,160 करोड़ रुपये से अधिक के बीमा दावों का निपटान किया जा चुका है।

वित्त मंत्री ने सोशल मीडिया मंच एक्स पर जानकारी साझा करते हुए कहा कि Pradhan Mantri Jeevan Jyoti Bima Yojana, Pradhan Mantri Suraksha Bima Yojana और Atal Pension Yojana का उद्देश्य समाज के कमजोर, गरीब और वंचित वर्गों तक सस्ती और प्रभावी वित्तीय सुरक्षा पहुंचाना है। उन्होंने कहा कि इन योजनाओं ने आर्थिक रूप से कमजोर परिवारों को कठिन परिस्थितियों में सहारा देने का काम किया है। इन तीनों महत्वाकांक्षी योजनाओं की शुरुआत प्रधानमंत्री Narendra Modi ने 9 मई 2015 को की थी। उस समय सरकार का उद्देश्य देश में वित्तीय समावेशन को मजबूत करना और आम नागरिकों को कम लागत में बीमा एवं पेंशन जैसी सुविधाओं से जोड़ना था। पिछले एक दशक में इन योजनाओं का विस्तार तेजी से हुआ है और अब ये करोड़ों लोगों के जीवन का हिस्सा बन चुकी हैं।

वित्त मंत्री के अनुसार, प्रधानमंत्री जीवन ज्योति बीमा योजना के तहत अब तक 27 करोड़ से अधिक नामांकन हो चुके हैं। वहीं प्रधानमंत्री सुरक्षा बीमा योजना में 58 करोड़ से अधिक लोग जुड़ चुके हैं। अटल पेंशन योजना के अंतर्गत भी 9 करोड़ से अधिक नागरिकों ने नामांकन कराया है। सरकार का कहना है कि इन योजनाओं ने देश में बीमा और पेंशन कवरेज को व्यापक बनाने में ऐतिहासिक भूमिका निभाई है।

प्रधानमंत्री जीवन ज्योति बीमा योजना के तहत अब तक 10.7 लाख से अधिक लाभार्थी परिवारों को 21,500 करोड़ रुपये से अधिक की दावा राशि का भुगतान किया जा चुका है। यह योजना मुख्य रूप से जीवन बीमा सुरक्षा प्रदान करती है, जिससे परिवारों को कमाऊ सदस्य की मृत्यु की स्थिति में आर्थिक सहायता मिलती है। वित्त मंत्रालय के अनुसार, इस योजना ने लाखों परिवारों को संकट के समय वित्तीय सहारा दिया है। इसी प्रकार प्रधानमंत्री सुरक्षा बीमा योजना के तहत 1.84 लाख से अधिक पात्र परिवारों को लगभग 3,660 करोड़ रुपये के दावों का भुगतान किया गया है। यह योजना दुर्घटना बीमा पर आधारित है और दुर्घटना के कारण मृत्यु या स्थायी विकलांगता की स्थिति में आर्थिक सहायता प्रदान करती है।

सरकार का कहना है कि कम प्रीमियम वाली यह योजना गरीब और निम्न आय वर्ग के लोगों के लिए अत्यंत उपयोगी साबित हुई है। विशेषज्ञों का मानना है कि इन योजनाओं की सबसे बड़ी विशेषता इनकी सुलभता और कम लागत है। बहुत कम वार्षिक प्रीमियम पर मिलने वाली बीमा सुरक्षा ने उन लोगों को भी औपचारिक वित्तीय सुरक्षा के दायरे में ला दिया, जो पहले बीमा सेवाओं से दूर थे। ग्रामीण क्षेत्रों, छोटे कस्बों और असंगठित क्षेत्र में काम करने वाले लोगों के बीच इन योजनाओं की पहुंच तेजी से बढ़ी है।

मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल पश्चिम बंगाल के नवनियुक्त मुख्यमंत्री श्री शुभेंदु अधिकारी के शपथ ग्रहण समारोह में सहभागी हुए

मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने नवनियुक्त मुख्यमंत्री को पुष्पगुच्छ अर्पित कर हार्दिक शुभकामनाएं और बधाई दी

गांधीनगर : मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल शनिवार को पश्चिम बंगाल के नवनियुक्त मुख्यमंत्री श्री शुभेंदु अधिकारी के शपथ ग्रहण समारोह में सहभागी हुए। उन्होंने नवनियुक्त मुख्यमंत्री को पुष्पगुच्छ अर्पित करके हार्दिक शुभकामनाएँ और बधाई दी । मुख्यमंत्री ने हर्ष व्यक्त किया कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के दूरदर्शी नेतृत्व और दिशादर्शन में भाजपा शासित सभी राज्य विकास, गुड गवर्नेंस और जनकल्याण के नए आयाम स्थापित कर रहे हैं, तब अब पश्चिम बंगाल भी इस विकास यात्रा में सहभागी हुआ है।

मुख्यमंत्री ने श्रद्धा व्यक्त की कि पश्चिम बंगाल प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के मार्गदर्शन और नवनियुक्त मुख्यमंत्री श्री शुभेंदु अधिकारी के नेतृत्व में अब ‘सोनार बांग्ला’ के संकल्प को साकार करेगा।

उन्होंने पश्चिम बंगाल विकास, शांति, सुशासन और समृद्धि के मार्ग पर नई ऊंचाइयां प्राप्त करे, ऐसी हृदयपूर्वक शुभकामनाएं भी दी।

पश्चिम रेलवे बांद्रा टर्मिनस से गोरखपुर तथा गोरखपुर से रतलाम के बीच चलाएगी विशेष किराये पर अनारक्षित स्पेशल ट्रेन

पश्चिम रेलवे द्वारा यात्रियों की सुविधा तथा ग्रीष्मकालीन सीजन के दौरान उनकी यात्रा मांग को पूरा करने के उद्देश्य से बांद्रा टर्मिनस से गोरखपुर तथा गोरखपुर से रतलाम के बीच विशेष किराए पर एक अनारक्षित स्पेशल ट्रेन चलाई जाएगी।

पश्चिम रेलवे के मुख्य जनसंपर्क अधिकारी श्री विनीत अभिषेक द्वारा जारी एक प्रेस विज्ञप्ति के अनुसार, ट्रेन संख्या 09157 बांद्रा टर्मिनस – गोरखपुर अनारक्षित स्पेशल रविवार, 10 मई, 2026 को 00:30 बजे बांद्रा टर्मिनस से प्रस्थान करेगी तथा अगले दिन 17:30 बजे गोरखपुर पहुंचेगी।

इसी प्रकार, ट्रेन संख्या 09158 गोरखपुर – रतलाम अनारक्षित स्पेशल सोमवार, 11 मई, 2026 को 20:30 बजे गोरखपुर से प्रस्थान करेगी तथा बुधवार को 01:00 बजे रतलाम पहुंचेगी।

ट्रेन संख्या 09157 बांद्रा टर्मिनस – गोरखपुर अनारक्षित स्पेशल मार्ग में बोरीवली, वापी, सूरत, वडोदरा, रतलाम, नागदा, कोटा, सवाई माधोपुर, बयाना, भरतपुर, मथुरा, हाथरस सिटी, कासगंज, बरेली सिटी, इज्जतनगर, पीलीभीत, मैलानी, सीतापुर, बुढ़वल, गोंडा, बस्ती एवं खलीलाबाद स्टेशनों पर ठहरेगी। ट्रेन संख्या 09158 गोरखपुर – रतलाम अनारक्षित स्पेशल गोरखपुर एवं रतलाम के बीच संबंधित मार्ग के सभी उपर्युक्त स्टेशनों पर ठहरेगी।

इस ट्रेन में जनरल सेकेंड क्लास कोच होंगे।

ट्रेनों के ठहराव समय की विस्तृत जानकारी के लिए यात्री कृपया www.enquiry.indianrail.gov.in पर जाकर अवलोकन कर सकते हैं।

भावनगर मंडल के मंडल रेल प्रबंधक श्री दिनेश वर्मा ने गांधीग्राम भावनगर सेक्शन का किया विंडो ट्रेलिंग एवं संरक्षा निरीक्षण

पश्चिम रेलवे के भावनगर मंडल के मंडल रेल प्रबंधक (डीआरएम) श्री दिनेश वर्मा ने दिनांक 09 मई, 2026 (शनिवार) को गांधीग्राम स्टेशन से भावनगर स्टेशन तक विस्तृत विंडो ट्रेलिंग निरीक्षण किया। इस दौरान उन्होंने गांधीग्राम, बावला, लोथल भुरखी एवं बोटाद स्टेशनों का संरक्षा, परिचालन एवं यात्री सुविधाओं के दृष्टिकोण से गहन निरीक्षण किया।

भावनगर मंडल के वरिष्ठ मंडल वाणिज्य प्रबंधक श्री अतुल कुमार त्रिपाठी ने जानकारी देते हुए बताया कि निरीक्षण के दौरान श्री वर्मा ने गांधीग्राम–सरखेज खंड में प्रगति पर चल रहे दोहरीकरण कार्य का विशेष रूप से जायजा लिया। उन्होंने निर्माण कार्यों की गुणवत्ता, निर्धारित सुरक्षा मानकों के अनुपालन तथा कार्य की प्रगति की विस्तृत समीक्षा की और संबंधित अधिकारियों को समयबद्ध एवं गुणवत्तापूर्ण निष्पादन सुनिश्चित करने के निर्देश दिए।

इसके अतिरिक्त, मंडल रेल प्रबंधक ने सेक्शन में संचालित विभिन्न निर्माण कार्यों, पथ संरचना, सिग्नल एवं दूरसंचार व्यवस्थाओं तथा अन्य रेल अधोसंरचना संबंधी व्यवस्थाओं का भी सूक्ष्म निरीक्षण किया। उन्होंने रेल परिसंपत्तियों के रखरखाव एवं संरक्षा मानकों के प्रति विशेष सतर्कता बरतने पर बल दिया।

श्री वर्मा ने यात्रियों को उपलब्ध कराई जा रही सुविधाओं जैसे स्टेशन परिसर की स्वच्छता, पेयजल व्यवस्था, प्रतीक्षालय, प्लेटफॉर्म पर उपलब्ध सुविधाएं तथा यात्री सुरक्षा व्यवस्थाओं का अवलोकन किया। निरीक्षण के दौरान उन्होंने संबंधित अधिकारियों को यात्रियों को बेहतर, सुरक्षित एवं सुविधाजनक सेवाएं उपलब्ध कराने हेतु आवश्यक दिशा-निर्देश दिए।

मंडल रेल प्रबंधक ने अधिकारियों एवं कर्मचारियों को संबोधित करते हुए कहा कि रेल संचालन में संरक्षा सर्वोच्च प्राथमिकता है तथा संरक्षा मानकों का शत-प्रतिशत अनुपालन सुनिश्चित करना प्रत्येक कर्मचारी की सामूहिक जिम्मेदारी है। उन्होंने सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों से उच्च स्तर की सतर्कता, समन्वय और कार्यकुशलता के साथ अपने दायित्वों का निर्वहन करने का आह्वान किया।

इस निरीक्षण के दौरान मंडल के विभिन्न विभागों के शाखा अधिकारी एवं संबंधित कर्मचारी उपस्थित रहे।